

त्योहारों पर स्थानीय कारीगरों से ही खरीदें सामान:प्रधानमंत्री

मन की बात में पीएम मोदी की आम जनता से अपील

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने त्योहारों के अवसर पर लोगों से स्थानीय कारीगरों द्वारा बनाए गए उत्पादों को खरीदने का आग्रह किया। उन्होंने मन की बात के 139वें एपिसोड में कहा कि इससे कारीगरों का उत्साह बढ़ेगा। पीएम ने कहा कि भारत



के स्थानीय उत्पादों की वैश्विक मांग बढ़ रही है। बिहार के पूर्णिया का मखाना अब ग्रीस और कर्नाटक के कलबुर्गी की अरहर दाल मालदीव पहुंच रही है, जिससे देश के किसानों के लिए दुनिया भर में नए अवसर खुल रहे हैं। उन्होंने कहा कि 12 साल पहले विजयदशमी के पानच पर्व पर इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई थी और यह यात्रा उनके लिए देशवासियों को करीब से जानने व समझने की एक तीर्थ यात्रा के समान है।

संक्षिप्त

समाचार

पंजाब विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस को झटका

- जलालाबाद के पूर्व विधायक रमिंदर आवला ने थामा अकाली दल का दामन**

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और जलालाबाद से पूर्व विधायक रमिंदर सिंह आवला ने शिरोमणि अकाली दल का दामन थाम लिया है। शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने उनका पार्टी में स्वागत किया है।



सुखबीर सिंह बादल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इसकी जानकारी साझा की। उन्होंने पूर्व विधायक के साथ फोटो भी शेयर की। सुखबीर सिंह बादल ने अपनी पोस्ट कर लिखा कि वरिष्ठ नेता और जलालाबाद से पूर्व विधायक, रमिंदर सिंह आवला का शिरोमणि अकाली दल में स्वागत करते हुए खुशी हो रही है। जलालाबाद ने मुझे तीन बार सेवा करने का मौका दिया। यह एक ऐसा चुनाव क्षेत्र भी है, जिसने अकाली दल की सरकारों के दौरान क्रांतिकारी विकास देखा है। बादल ने आगे लिखा कि अब रमिंदर सिंह आवला के पार्टी में शामिल होने से मुझे विश्वास है कि वह इस चुनाव क्षेत्र के साथ-साथ पूरे बॉर्डर इलाके में शिरोमणि अकाली दल को मजबूत करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करेंगे, ताकि 2027 में पार्टी की जीत पक्की हो सके।

दुर्गा विसर्जन जुलूस पर अंडे फेंकने के बाद बवाल

- हैदराबाद में कोहराम,हिंदू संगठनों ने किया विरोध प्रदर्शन**

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में दुर्गा विसर्जन जुलूस के दौरान एक संवेदनशील मामला सामने आने के बाद देर रात भारी तनाव फैल गया। आरोप है कि मदात्पेट पुलिस स्टेशन के इलाके में संतोष नगर होटल



लेन के पास एक जुलूस के दौरान दुर्गा माता की प्रतिमा पर कुछ लोगों ने अंडे फेंके। इस घटना के विरोध में हिंदू संगठनों ने जमकर हंगामा और प्रदर्शन किया। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, उन्हें रात में डायल 100 पर एक कॉल मिली थी, जिसमें यह सूचना दी गई कि संतोष नगर होटल लाइन के पास विसर्जन जुलूस के दौरान कुछ उपद्रवियों ने दुर्गा माता की प्रतिमा पर अंडे फेंके हैं। सूचना मिलते ही पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और हालात को संभाला। पुलिस ने इस मामले में एफआईआर दर्ज कर कुछ संदिग्धों को हिरासत में ले लिया है और फिलहाल पूरे मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है।

पीएम बोले- खादी की बिक्री में 28 करोड़ पहुंची

मोदी ने कहा कि गांधी जयंती के अवसर पर केवल एक ही दिन में खादी ग्रामोद्योग के उत्पादों की बिक्री 28 करोड़ रुपए से अधिक दर्ज की गई, जो पिछले साल की तुलना में भी करीब डेढ़ करोड़ रुपये ज्यादा है। पीएम ने कहा कि 4 नवंबर को महान स्वतंत्रता सेनानी भाई परमानंद जी की 150वीं जयंती है। आर्य समाज और गदर पार्टी से जुड़े भाई परमानंद जी ने दक्षिण अफ्रीका व गुयाना में कार्य किया और आजादी की लड़ाई में काला पानी की सजा काटी।

- एनएचपीसी ऑफिस और थाने में भीड़ ने लगाई आग**
- बीजेपी अध्यक्ष के घर में तोड़फोड़,कई पुलिसकर्मी घायल**

ईटानगर (एजेंसी)। अरुणाचल प्रदेश में 11,200 मेगावाट के प्रस्तावित सियांग प्रोजेक्ट के विरोध में शुक्रवार रात हिंसा भड़क गई। भीड़ ने एनएचपीसी ऑफिस और पुलिस स्टेशन में आग लगा दी। सात-आठ पुलिस वाहन भी जला दिए गए। प्रदर्शनकारियों ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष कलिंग मोयोंग और विधायकों के घरों में तोड़फोड़ की। पथराव में डीएसपी समेत कई पुलिसकर्मी घायल हुए। प्रस्तावित बांध का मकसद चीन से आने वाले पानी को नियंत्रित करना और बाढ़ का खतरा कम करना है। सियांग, अपर सियांग और पूर्वी सियांग जिलों में शुक्रवार को 12 घंटे का बंद बुलाया गया था। अधिकारियों के मुताबिक, बंद के दौरान सियांग जिले में करीब 150 से 200



आदिवासी संगठन के ऑफिस में भी तोड़फोड़

पासीघाट के डीएसपी टोनी तातक के मुताबिक, प्रदर्शनकारी मेबो इलाके से आए थे। भीड़ ने आदि समुदाय के प्रमुख संगठन आदि बाने केबांग के कार्यालय में भी तोड़फोड़ की। पुलिस नुकसान का आंकलन कर रही है। विधायक निनॉंग एरिंग के मुताबिक, रात करीब 2 बजे 300-400 युवा उनके घर पहुंचे। उन्होंने तोड़फोड़ कर संपत्ति लूट ली। बंद का आह्वान चार संगठनों ने मिलकर किया था। प्रदर्शनकारियों की मांग है कि गिरफ्तार किए गए 10 कार्यकर्ताओं को रिहा किया जाए, निर्लंबित गांव के मुखियाओं को फिर से बहाल किया जाए, प्रोजेक्ट से जुड़े शुरुआती सर्वे बंद किए जाएं और इलाके में तैनात अर्धसैनिक व केंद्रीय सुरक्षा बलों को हटाया जाए।

एसआईआर सॉफ्टवेयर की जानकारी देने से ईसी का इनकार

- कहा-यह ट्रेड सीक्रेट ,आरटीआई के तहत सार्वजनिक नहीं कर सकते**

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग ने स्पेशल इंटेलिज रिक्वीजन के दौरान वोटर लिस्ट में गड़बड़ियां पहचानने के लिए इस्तेमाल किए गए सॉफ्टवेयर की जानकारी देने से इनकार कर दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक, आयोग ने आरटीआई के जवाब में कहा- यह जानकारी ट्रेड सीक्रेट और इंटलेक्चुअल प्रॉपर्टी से जुड़ी है। इसे आरटीआई कानून के तहत सार्वजनिक नहीं किया जा सकता। आयोग ने यह भी साफ नहीं किया कि वोटर लिस्ट में गड़बड़ियां पहचानने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस या मशीन लर्निंग का इस्तेमाल किया था।

जज के नाबालिग बेटे ने मर्सिडीज से मारी टक्कर

- केरलम में स्कूटर सवार की मौत ,पीड़ित परिवार नाराज**

तिरुअनंतपुरम (एजेंसी)। केरलम के कोच्चि में शनिवार देर रात मर्सिडीज कार ने स्कूटर को पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में 55 साल के स्कूटर सवार की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस के मुताबिक, कार चलाने वाला एड्रिशनल सेशन जज का बेटा है। उसकी उम्र 17 साल है। कार जज के नाम पर रजिस्टर्ड थी। हादसा रात 2 से 3 बजे के बीच हुआ।



घटनास्थल के एक वीडियो में कार का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त दिखाई दिया। पीड़ित परिवार ने आरोप लगाया कि पुलिस स्टेशन में जब उन्होंने नाबालिग को कार चलाने देने पर सवाल उठाया, तो जज ने उनसे अपमानजनक लहजे में बात की। हादसे में जान गंवाने शख्स की पहचान जयबालकृष्णन के रूप में हुई है। वह करीब 30 साल से अपनी पत्नी मंजू के साथ सड़क किनारे खाने का स्टॉल चला रहे थे। रिपोर्ट के मुताबिक, जयबालकृष्णन ने शनिवार रात चित्तूर मंदिर के पास अपना स्टॉल बंद किया था। वह रोज शाम करीब 4 बजे दुकान खोलते थे और वहां मुख्य रूप से डोसा सहित शाकाहारी खाना बेचते थे।



दुश्मन की रणनीति के हिसाब से खुद को ढालना बेहद जरूरी

एयरफोर्स चीफ बोले-कोई लक्ष्य हमारी पहुंच से बाहर नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायुसेना ने पश्चिमी मोर्चे पर 1,200 किलोमीटर चौड़े और 200 किलोमीटर क्षेत्र में सटीक हमले किए। इससे साबित हुआ कि वायुसेना की पहुंच से कोई भी लक्ष्य बाहर नहीं है। उन्होंने कहा कि इस अभियान ने एक बार फिर दिखाया कि देश की सुरक्षा में वायुसेना की अहम भूमिका है। ऑपरेशन से एक सबक साफ है कि हमें हमेशा कई विकल्प अपने पास रखने चाहिए और दुश्मन की रणनीति बदलने पर तेजी से खुद को उसके मुताबिक ढालने में सक्षम होना चाहिए। उन्होंने यह बात एक



वायुसेना को अपनी युद्ध क्षमता बढ़ाने पर ध्यान देना होगा

अब वायुसेना को अपनी युद्ध क्षमता बढ़ाने पर ध्यान देना होगा। इसके लिए लड़ाकू विमानों और सैन्य संसाधनों की संख्या बढ़ानी होगी। साथ ही, खुफिया जानकारी जुटाने, निगरानी, इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर, ड्रोन को रोकने और मजबूत नेटवर्क बनाने की क्षमता बढ़ानी होगी। फैसले लेने में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का इस्तेमाल भी बढ़ाना होगा। भारतीय वायुसेना का विजन 2047 तक विकसित भारत के राष्ट्रीय लक्ष्य से जुड़ा है। विकसित भारत के लिए देश का सुरक्षित और संकटों का सामना करने में सक्षम होना भी जरूरी है।

इंटरव्यू में कही। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता किसी एक हथियार या विमान की वजह से नहीं मिली। इसमें सटीक खुफिया जानकारी, एक-दूसरे से जुड़े सैन्य नेटवर्क, दूर से हमला करने वाले हथियार, इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर, मजबूत वायु रक्षा प्रणाली और ड्रोन को रोकने की क्षमता ने मिलकर काम किया।

सेना ने एलओसी में 9 आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया

22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला हुआ था। 26 दूरिस्ट की हत्या की गई थी। ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तेयबा से जुड़े 9 आतंकी ठिकानों पर सटीक हमले किए थे। भारत सरकार ने कहा था कि इन हमलों में 100 से ज्यादा आतंकियों को मार गिराया था। इसके बाद 10 मई को भारत और पाकिस्तान के सैन्य अभियान महानिदेशकों के बीच बातचीत के बाद दोनों देशों ने सैन्य कार्रवाई रोकने पर सहमति जताई थी।

काशी के नमो घाट पर राफेल सुखोई ने दिखाए ‘करतब’

वायु सेना का शौर्य देख गदगद हुए पीएम,लाखों लोग रोमांचित



वाराणसी (एजेंसी)। पीएम मोदी ने रविवार को वाराणसी के नमो घाट पर एयर शो देखा। शो में 100 विमानों ने हिस्सा लिया। इनमें राफेल और सुखोई जैसे 52 लड़ाकू विमान भी शामिल थे। पीएम मोदी के साथ रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और सीएम योगी ने भी एयर शो देखा। नमो घाट पर पीएम मोदी ने करीब एक घंटे तक वायु सेना का शौर्य देखा। इसके बाद वायु सेना के चीफ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

आसमानमेंविमानोंकी गर्जनासेगूंज उठी काशी

गंगा के ऊपर लड़ाकू विमानों और हेलीकॉप्टरों के प्रदर्शन ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। घाट के आसपास बड़ी संख्या में लोग एयर शो देखने के लिए जुटे रहे। आसमान में विमानों की गर्जना और उनके हेरतअंगेज करतबों के बीच देशभक्ति का माहौल नजर आया। कार्यक्रम में भारतीय वायुसेना की क्षमता और साहस का प्रदर्शन किया गया। वाराणसी के नमो घाट पर एयर शो में 100 से ज्यादा विमानों और हेलीकॉप्टरों ने हवाई करतब दिखाकर लोगों को रोमांचित कर दिया।

आज सुल्तानपुर कोर्ट में होंगे पेश राहुल गांधी

अमित शाह पर टिप्पणी से जुड़े मानहानि केस में आएगा फैसला



सुल्तानपुर (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी से जुड़े मानहानि मामले में सोमवार को सुल्तानपुर की एमपी-एमएलए कोर्ट फैसला सुनाएगा। विशेष मजिस्ट्रेट शुभम वर्मा की अदालत ने इस महत्वपूर्ण मामले में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को व्यक्तिगत रूप से उपस्थित रहने का आदेश दिया है। कोतवाली देहात थाने के हनुमानगंज निवासी भाजपा नेता विजय मिश्र ने 4 अगस्त 2018 को राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि परिवाद दायर किया था।

2024 में राहुल गांधी ने कराई थी जमानत

राहुल गांधी 20 फरवरी 2024 को अदालत में पेश होकर जमानत करा चुके हैं। इस मामले में लंबी कानूनी प्रक्रिया के बाद 13 अक्टूबर, 2026 को एमपी-एमएलए कोर्ट में दोनों पक्षों के वकीलों की बहस की कार्यवाही पूरी हो चुकी है। इसके बाद अदालत ने मामले में फैसला सुरक्षित रख लिया था।

आतिशबाजी निर्माण और भंडारण में जीवन गंवाते लोग

(लेखक – मनोज कुमार अग्रवाल)

जिन फैक्ट्रियों का इतिहास नियमों को तोड़ने का रहा है, उनके लाइसेंस तुरंत तुरंत रद्द कर उन्हें हमेशा के लिए सील कर दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, कामगारों की सुरक्षा से समझौता करने वाली हर इकाई के लिए सार्वजनिक दायित्व बीमा अनिवार्य किया जाए ताकि दुर्घटना की स्थिति में पीड़ित परिवारों को तुरंत संबल मिल सके। फैक्ट्रियों में काम करने वाले हर मजदूर को सुरक्षा उपकरण और विशेष ट्रेनिंग मिलना अनिवार्य हो। सबसे बढ़कर, स्थानीय पुलिस और प्रशासन की जवाबदेही तय होनी चाहिए क्योंकि बिना भ्रष्ट मिलीभगत के रिहायशी इलाकों में बारूद के इतने बड़े गोदाम पनप ही नहीं सकते। पटाखे खुशियों का प्रतीक हैं, वे किसी के घर का मातम या चिता की आग नहीं बनने चाहिए।

आतिशबाजी निर्माण और भंडारण जानलेवा बन रहा है एक दिन पहले ही बिहार के सिवान जिले के जामो बाजार थाना क्षेत्र के आलमपुर गांव में एक मकान में पटाखा बनाते समय हुए भीषण विस्फोट में से 6 लोगों की मौत हो गई मो. अमीरुद्दीन मियां के घर में रखे और बनाए जा रहे पटाखों में आग लगने से हुए सिलसिलेवार धमाकों में 5-6 लोगों की जान चली गई और मकान का बड़ा हिस्सा दह गया इससे पहले सितंबर में ग्रेटर नोएडा में रावण के पुतले के लिए आतिशबाजी बना रहे पिता पुत्र समेत तीन लोगों की जान चली गई। प्रयागराज-कोशांबी बॉर्डर हादसा अगस्त 2026 मोहम्मदपुर गांव में एक पटाखा फैक्ट्री में हुए भीषण विस्फोट में 11 लोगों की मौत हो गई थी।

विदेशों में भी ऐसे हादसे हो रहे हैं मेक्सिको आतिशबाजी हादसा सितंबर 2026 एक धार्मिक उत्सव के दौरान आतिशबाजी में धमाका होने से कम से कम 10 लोगों की मौत हो गई और 60 से अधिक घायल हुए।

अवैध रूप से घनी आबादी वाले रिहायशी इलाकों में आतिशबाजी का निर्माण और भंडारण जानलेवा साबित होता है, जिससे मलबे में दबने, जलने और दम घुटने से मौतें होती हैं।भारत में त्योहारों की चमक धमक, शायदियों की खुशियां और जश्न के पल अक्सर पटाखों के शोर से गुलजार होते हैं, लेकिन इस रंगीन आतिशबाजी के पीछे एक बेहद भीषन्त और खौफनाक सच छिपा है, जो देश की अंतरात्मा को झकझोर देने के लिए काफी है। आतिशबाजी के कारोवार का चमकता बाजार अपने पीछे खून से सने वे पन्ने छोड़ रहा है, जहां हर साल दर्जनों गरीब मजदूर दो वक्त की रोटी की कीमत अपनी जान देकर चुकाते हैं। सुरक्षा नियमों की घोर अनदेखी और और प्रशासनिक लापरवाही के कारण देश की पटाखा फैक्ट्रियां और अवैध गोदाम धीरे-धीरे मौत के कुएं में तब्दील हो चुके हैं। आप दिन देश के किसी न किसी कोने

से धमाकों की गूंज सुनाई देती है और निर्दोष मजदूरों की अर्थियां उठती हैं। शुक्रवार को ही बिहार के सीवान जिले के जामो थाना क्षेत्र स्थित आलमपुर गांव में एक पटाखा कारोबारी के घर हुआ भीषण विस्फोट इस बात का ताजा और दर्दनाक प्रमाण है। इस हादसे में एक ही परिवार के सदस्यों और मजदूरों समेत कई लोगों की जान चली गई है। कई शव इस कदर क्षत-विक्षत हो गए हैं कि उनकी पहचान करना तक मुश्किल हो गया। सीवान की यह घटना कोई अकेली बानगी नहीं है। टीक आज ही राजस्थान के अलवर शहर के बीचों-बीच चल रही एक कपड़े की दुकान की आड़ में अवैध पटाखा गोदाम सुलग उठा, संयोग यह रहा कि समय रहते दमकल गाड़ियों ने आग पर काबू पा लिया वरना एक बड़ा जनसंहार हो सकता था। पिछले महीने बिहार के अररिया में भी अवैध पटाखा फैक्ट्री में ब्लास्ट हुआ था। इसके अलावा मध्य प्रदेश के हरदा, देवास, गुजरात और पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना से लेकर तमिलनाडु के त्रैकर केपिटल कहे जाने वाले सिक्कासी (विरुधुनगर) तक, देश का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र बचा हो जहां बारूद के इन देरों ने मासूमों की जिंदगियां न ली हों।

आपको बता दें कि अनुमान के मुताबिक, भारत में पटाखा फैक्ट्रियों और आतिशबाजी इकाइयों में होने वाली दुर्घटनाओं में हर साल औसतन 50 से 100 मजदूरों की जान जाती है। जबकि छुड़ाने में इनसे दोगुना लोग बच्चे जान गंवा देते हैं। केवल साल 2023 और 2024 के आंकड़े गवाह है कि किस तरह नियमों की धंजिज्यां उड़ाई गई और सैकड़ों परिवारों ने अपनों को हमेशा के लिए खो दिया। इन जानलेवा हादसों के मूल कारणों की गहराई से समीक्षा करें, तो सबसे बड़ा दोषी प्रशासनिक तंत्र की उदासीनता और सुरक्षा नियमों का खुला उल्लंघन नजर आता है। अधिकांश मामलों में देखा गया है कि फैक्ट्रियों या घरों में लाइसेंस तो सीमित मात्रा में विस्फोटक रखने का होता है, लेकिन भंडारण उससे कई गुना ज्यादा किया जाता है। मध्य प्रदेश के एक चर्चित हादसे में भी यह बात

सामने आई थी कि संचालकों के पास मात्र 15 किलो विस्फोटक का लाइसेंस था, जबकि भीतर सैकड़ों किंटल बारूद का जखीरा छिपाकर रखा गया था। सीवान में भी आबादी के बीचों-बीच, रिहायशी इलाकों में बिना किसी सुरक्षा उपकरण के अवैध रूप से बारूद का कारोबार धड़ल्ले से चल रहा था। तमिलनाडु के विरुधुनगर में भी एनजीटी (नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल) की जांच कमेटियों ने पाया कि तमाम लाइसेंस होने के बावजूद विस्फोटक नियम, 2008 के प्रावधानों को ताक पर रख दिया जाता है। अनुमति से अधिक रसायनों का इस्तेमाल, क्षमता से ज्यादा मजदूरों को झोंकना और भनी बस्तियों में अवैध निर्माण इन दुर्घटनाओं की सीधी पटकथा कथा लिखते हैं। हृदयविदारक पहलू यह है कि इन कारखानों में अपनी जान की बाजी लगाकर काम करने वाले लोग वे मजदूर होते हैं, जो दो वक्त की रोटी की तलाश में अपनी जिंदगी दांव पर लगाने को मजबूर हैं। गरीबी और लाचारी का फायदा उठाकर फैक्ट्री मालिक उन्हें बिना किसी सुरक्षा गियर, अग्निशमन यंत्र या ट्रेनिंग के मौत के मुंह में में धकेल देते हैं। जब कभी धमाका होता है, तो मकानों के चीथड़े उड़ जाते हैं, लाशों के टुकड़े सैकड़ों मीटर दूर खेतों में जाकर गिरते हैं और प्रशासन चंद दिनों के शोक, मुआवजे के ऐलान और कागजी कार्रवाई के बाद फिर से उसी गहरी नींद में सो जाता है। यह अनदेखी इस व्यवस्था का सबसे काला सच है। अब सवाल यह उठता उठता है कि आखिर इस इस खूनी खेल पर पूर्ण विराम कैसे लगे? क्या हम हर साल दिवाली या शायदियों के सीजन में इसी तरह मासूमों की अर्थियां उठते देखते रहेंगे? समाधान के अभाव में यह चक्रव्यूह कभी नहीं टूटेगा। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) और विभिन्न जांच कमेटियों ने कई बार ठोस और व्यावहारिक सुझाव दिए हैं, जिनपर अब तत्काल और कठोरता से अमल करने का वक्त आ गया है।

सबसे पहले, अवैध रूप से रिहायशी इलाकों में चल रही पटाखा इकाइयों और गोदामों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जानी चाहिए। समय-समय पर

प्रशासनिक औचक निरीक्षण के साथ-साथ पटाखा फैक्ट्रियों की आधुनिक तकनीक जैसे ड्रोन से निगरानी सुनिश्चित की जानी चाहिए ताकि अवैध भंडारण को छिपाया न जा सके। दूसरा, विस्फोटक अधिनियम के नियमों का उब्धन करने वालों के खिलाफ सिर्फ हल्की धाराओं में मामले दर्ज करने के बजाय उन पर भारी वित्तीय जुर्माने (कम से कम 50 लाख रुपए या उससे अधिक) और सख्त से सख्त गैर-जमानती धाराओं के तहत सजा का प्रावधान होना चाहिए। जिन फैक्ट्रियों का इतिहास नियमों को तोड़ने का रहा है, उनके लाइसेंस तुरंत तुरंत रद्द कर उन्हें हमेशा के लिए सील कर दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, कामगारों की सुरक्षा से समझौता करने वाली हर इकाई के लिए सार्वजनिक दायित्व बीमा अनिवार्य किया जाए ताकि दुर्घटना की स्थिति में पीड़ित परिवारों को तुरंत संबल मिल सके। फैक्ट्रियों में काम करने वाले हर मजदूर को सुरक्षा उपकरण और विशेष ट्रेनिंग मिलना अनिवार्य हो। सबसे बढ़कर, स्थानीय पुलिस और प्रशासन की जवाबदेही तय होनी चाहिए वयोंकि बिना भ्रष्ट मिलीभगत के रिहायशी इलाकों में बारूद के इतने बड़े गोदाम पनप ही नहीं सकते। पटाखे खुशियों का प्रतीक हैं, वे किसी के घर का मातम या चिता की आग नहीं बनने चाहिए। जब तक सरकारें, प्रशासन और उद्यमी मिलकर संवेदनशीलता और सख्ती का परिचय नहीं देंगे, तब तक ये बेगुनाहों की बलि लेते रहेंगे। समय आ गया है कि इस बारूद संस्कृति पर लगाम कसी जाए, ताकि कोई और मासूम दो वक्त की रोटी की कीमत अपनी जान देकर न चुकाए। त्योहारों की खुशी तभी सार्थक होगी, जब उसे तैयार करने वाला मजदूर भी शाम को सुरक्षित घर लौट सके।यह तभी संभव है जब आतिशबाजी छुड़ाने वाले लोग भी इस से किनारा कर जीवन बचाने की मुहिम से जुड़े।

(लेखक वैरिष्ठ पत्रकार हैं पिछले 40 वर्ष से लेखन और पत्रकारिता से जुड़े हैं) (यह लेखक के व्यक्‍तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ‍निवार्य नहीं है)

महर्षि वाल्मीकि की रामायण-रचना की प्रेरणा

(लेखक – डॉ. नरेंद्र कुमार मेहता ‘मानस श्री’)

महर्षि वाल्मीकि जयंती पर विशेष लेख)

भारतीय साहित्य और संस्कृति में महर्षि वाल्मीकि का स्थान अत्यंत उँचा है। उन्हें आदिकवि कहा जाता है और उनकी रामायण को आदिकाव्य की संज्ञा दी जाती है। यह केवल श्रीराम के जीवन की कथा नहीं, बल्कि धर्म, करुणा, कर्तव्य, त्याग, मर्यादा और मानवीय संवेदना का महाकाव्य है। रामायण को महाकाव्य इसलिए कहा जाता है कि इसका विषय किसी एक घटना तक सीमित नहीं, बल्कि एक नायक के जीवन और उसके माध्यम से पूरे समाज के नैतिक-सांस्कृतिक प्रश्नों का विस्तृत चित्रण है। इसमें राजधर्म, पितृभक्ति, भ्रातृप्रेम, दाम्पत्य-निष्ठा, मित्रता, जनकल्याण, शौर्य, करुणा, प्रकृति और मानवीय दुर्बलताओं का व्यापक वर्णन है। कथा का विस्तार, अनेक पात्र, विविध रस, प्रकृति-चित्रण, संवाद, युद्ध-वर्णन और आदर्शों की परीक्षा इसे महाकाव्यात्मक गरिमा देते हैं।

महर्षि महर्षि वाल्मीकि –रामायण के बालकाण्ड के आरंभ में महर्षि वाल्मीकि देवर्षि नारद मुनि से प्रश्न करते हैं कि संसार में ऐसा कौन मनुष्य है जो गुणवान, वीर, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवादी, दृढ़प्रतिज्ञ और सबके हित की भावना रखने वाला हो। नारद मुनिउन्हें श्रीराम का परिचय देते हैं और संक्षेप में श्रीराम के जीवन, गुणों तथा आदर्शों का वर्णन करते हैं। इस प्रकार नारद मुनि रामकथा के प्रथम प्रमुख प्रेरणा-स्रोत बनते हैं। महर्षि वाल्मीकि के सामने अब एक ऐसे चरित्र का आदर्श उपस्थित था जिसमें शक्ति के साथ विनम्रता, पराक्रम के साथ करुणा और अधिकार के साथ कर्तव्य का समन्वय था।

नारद मुनि के जाने के बाद महर्षि वाल्मीकि तमसा नदी के तट की ओर जाते हैं। वहाँ वे क्रीच पक्षियों के एक जोड़े को देखते हैं। एक बहेलिया प्रणयत्रत जोड़े में से नर पक्षी को मार गिराता है। मादा पक्षी का करुण विलाप सुनकर महर्षि वाल्मीकि का हृदय द्रवित हो उठता है और उनके मुख से स्वतः एक छंदबद्ध वाणी निकलती है, जो शोक से उपजी कविता का रूप लेती है। परंपरा में इसे संस्कृत के प्रथम श्लोक का उद्गम माना जाता है। उसका प्रसिद्ध पाठ है—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधौः काममोहितम्॥

हे निषाद, काम-मोह में मग्न क़ौच-युगल में से एक का वध करने के कारण तुम्हें दीर्घकाल तक प्रतिष्ठा न मिले। इस प्रसंग में करुणा केवल भावुकता नहीं रहती; वह काव्य की सृजन-शक्ति बन जाती है। इसी कारण संस्कृत परंपरा में ‘शोक’ से ‘श्लोक’ के उद्भव की व्याख्या की जाती है।

परंपरागत कथा के अनुसार, इसके बाद सृष्टिकर्ता ब्रह्मा महर्षि वाल्मीकि के अनुग्रह में आते हैं। वे इस छंद को दैवी प्रेरणा से उत्पन्न बताते हैं और महर्षि वाल्मीकि को नारद मुनिसे सुनी रामकथा को इसी काव्य-रूप में विस्तार देने का निर्देश देते हैं। ब्रह्मा उन्हें आश्चस्त करते हैं कि श्रीराम के जीवन की ज्ञान-अज्ञात घटनाएँ उनके काव्य में प्रकट होंगी और उनकी रचना तब तक लोक में रहेगी जब तक पर्वत और नदियाँ विद्यमान हैं। इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि की प्रेरणा के तीन मुख्य आधार सामने आते हैं— नारद मुनि से प्राप्त श्रीरामचरित्र, क़ौच-वध से जागी करुणा और ब्रह्मा का दैवी आदेश।

श्रीराम के संबंध में महर्षि वाल्मीकि को नारद मुनि से कथा और ब्रह्मा से काव्य-दृष्टि प्राप्त होती है। उत्तरकाण्ड की परंपरा

में महर्षि वाल्मीकि का सीता को आश्रय देना तथा कुश-लव को रामकथा सिखाना भी आता है। महर्षि वाल्मीकि के युग की विद्वत्, वैदिक और काव्य-परंपरा में संस्कृत का महत्त्वपूर्ण स्थान था। संस्कृत में छंद, ध्वनि, शब्द-संपदा और व्याकरण की विकसित परंपरा उपलब्ध थी, जिससे गंभीर आख्यान को लयबद्ध और स्मरणीय रूप दिया जा सकता था। रामायण का श्लोक-छंद कथानक, संवाद, युद्ध, प्रकृति-वर्णन और भावनाओं को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने में समर्थ सिद्ध हुआ।

महर्षि वाल्मीकि –रामायण सात काण्डों में विभाजित है— बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्ध्याकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड। यह विभाजन श्रीराम के जीवन की घटनाओं को क्रमशः प्रस्तुत करता है- जन्म और बाल्यकाल; राज्याभिषेक की तैयारी तथा वनवास; वन-जीवन और सीता-हरण; सुग्रीव तथा वानर-सेना से मैत्री; हनुमान का लंका जाना और सीता का पता लगाना; युद्ध और विजय; तथा उत्तरकाण्ड में आगे की घटनाएँ। इस क्रम से कथा में आरंभ, विकास, संघर्ष, चरमबिंदु और परिणति का व्यापक ढाँचा बनता है।

महर्षि वाल्मीकि की रामायण-रचना के पीछे ज्ञान, करुणा, काव्य-प्रतिभा और दैवी प्रेरणा का अद्भुत संगम दिखाई देता है। नारद मुनि ने आदर्श पुरुष के रूप में श्रीराम का चरित्र सामने रखा; क़ौच-वध ने करुणा को छंद में ढाल दिया; और ब्रह्मा के आशीर्वाद ने उस भाव को महाकाव्य में विकसित करने का संकल्प दिया। महर्षि वाल्मीकि जयंती पर उनका स्मरण हमें यह संदेश देता है कि महान साहित्य का जन्म केवल विद्वता से नहीं, बल्कि संवेदनशील हृदय, सत्य की खोज और लोकमंगल की भावना से होता है।

क्यों कहते हैं विष्णु भगवान को नारायण



भगवान विष्णु के हजारों नाम हैं। इनमें एक प्रमुख नाम है नारायण। फिल्मों, टीवी सीरियल या रामलीला में आपने देखा होगा कि नारद मुनि भगवान विष्णु को नारायण नाम से पुकारते हैं। इस नाम का धार्मिक रूप से बड़ा महत्व है। इस एक नाम में सृष्टि का संपूर्ण सार छिपा हुआ है। इसलिए शास्त्रों में अधिकांश स्थानों पर विष्णु भगवान को नारायण नाम से संबोधित किया गया है। हिन्दू धर्म में अठारह पुराणों का वर्णन मिलता है। इन अठारह पुराणों में विष्णु पुराण एक है। इस पुराण में सृष्टि की रचना का वर्णन किया गया है। इसी प्रम में बताया गया है किस प्रकार विष्णु भगवान ने वाराह रूप धारण करके पृथ्वी को रसातल यानी पाताल लोक से उठाकर जल के मध्य में स्थित किया। इसके बाद ब्रह्मा

जी ने सत्व, रज और तम गुणों से असुर, देव, राक्षस, यक्ष, मनुष्य, सर्प एवं अन्य जीव-जन्तुओं की रचना की।

विष्णु पुराण में बताया गया है कि सृष्टि के समाप्ति के समय सब कूष्ठ जल में समा जाता है और संपूर्ण ब्रह्माण्ड अंधकारमय हो जाता है। भगवान विष्णु चिर निद्रा में जल में शयन करते हैं। देवताओं का दिन आरंभ होने पर भगवान विष्णु फिर से सृष्टि की रचना करते हैं और ब्रह्मा एवं शिव की उत्पत्ति उन्हीं से होती है। भगवान विष्णु प्रथम नर रूप में व्यक्त होते हैं। इसलिए शापाङ्क में इन्हें आदिपुरुष कहा गया है। आदि पुरुष विष्णु का निवास यानी आ्यन नार यानी जल है इसलिए भगवान विष्णु को नारायण नाम से संबोधित किया जाता है।

विचार मंथन

(लेखक- सनत जैन)

-सुप्रीम कोर्ट में लंबित 25 प्रकरण न्याय व्यवस्था पर गंभीर सवाल

न्यायापालिका का अस्तित्व केवल फैसले सुनाने से नहीं, बल्कि समय पर न्याय देने से कायम रहता है। जब न्याय के सर्वोच्च मंदिर सुप्रीम कोर्ट में ही महत्वपूर्ण संवैधानिक मामलों पर वर्षों तक सुनवाई नहीं होती, फैसले सुरक्षित रखकर लंबे समय तक फैसले सुनाए नहीं जाते हैं, याचिकाकर्ता तारीखों के इंतजार में अपनी जिंदगी गुजार देते हैं, तब सवाल केवल न्याय में देरी का नहीं, बल्कि पूरी न्याय व्यवस्था की जवाबदेही का खड़ा होता है। सुप्रीम कोर्ट में संविधान पीठ के गठन और सुनवाई के इंतजार में लगभग 25 महत्वपूर्ण प्रकरण लंबित होने की जानकारी न्यायिक व्यवस्था की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठाती है। इनमें कुछ मामले 16 वर्षों से संविधान पीठ की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जबकि छह मामलों में सुनवाई पूरी होने के बाद

भी कथित तौर पर एक दशक से फैसले लंबित हैं। जिन न्यायाधीशों ने इन मामलों की सुनवाई की, उनमें से अधिकांश सेवानिवृत्त हो चुके हैं। आखिर जिन मामलों को स्वयं सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों ने संविधान पीठ के समक्ष सुनवाई योग्य और महत्वपूर्ण माना, वे वर्षों तक निर्णय की प्रतीक्षा क्यों कर रहे हैं? इन प्रकरणों का प्रभाव किसी एक याचिकाकर्ता तक सीमित नहीं है। आरक्षण, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, रोजगार, केंद्र और राज्यों के अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता, महिला संपत्ति अधिकार तथा डिजिटल निजता करोड़ों नागरिकों के संवैधानिक एवं लोकतांत्रिक अधिकारों एवं उनके जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। देशद्रोह कानून, विधानसभा अध्यक्ष के अधिकार और न्यायाधिकरणों के सदस्यों की सेवा शर्तों से संबंधित मामलों में भी लंबित सुनवाई संवैधानिक व्यवस्था को प्रभावित कर रही है। जब कानून की व्याख्या ही सर्वोच्च न्यायालय में लंबित हो, तब सरकारों, प्रशासन, नागरिकों और निचली अदालतों के सामने अनिश्चितता बनी रहती है। इससे अराजकता की स्थिति बनती है। सबसे गंभीर प्रश्न यह है,

न्यायापालिका अपनी प्राथमिकताएँ कैसे तय कर रही है?

सुप्रीम कोर्ट में मुख्य न्यायाधीश को मास्टर ऑफ़ रोलस्टर का अधिकार प्राप्त है। न्यायालय के पास उपलब्ध न्यायाधीशों, पीठों और न्यायिक संसाधनों का बेहतर प्रबंधन करके संवैधानिक मामलों की सुनवाई के लिए निश्चित समय-सारणी बनाई जा सकती है। संविधान पीठ के मामलों को वर्षों तक लंबित छोड़ना, किसी भी स्थिति में सामान्य न्यायिक प्रक्रिया मानकर स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। विशेषकर उन मामलों में, जिनका निर्णय पूरे देश की कानूनी व्यवस्था को दिशा देने वाला हो। सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट को लेकर आम नागरिकों के बीच एक चिंताजनक धारणा बनने लगी है। जिन मामलों में सरकार पक्षकार होती है, उनमें सुनवाई और निर्णय की प्रक्रिया असाधारण रूप से लंबी खिंच जाती है, कहीं अंतरिम आदेशों के सहारे परिस्थितियां बदल जाती हैं। चुनाव आयोग, और एसआईआर मामले में लंबी सुनवाई के बाद टुकड़े-टुकड़े में फैसला देने और जिन प्रक्रियाओं को लेकर लंबे समय तक सुप्रीम कोर्ट में बहस चली, उस पर निर्णय

अभी तक लंबित है। कहीं फैसला सुरक्षित रखने के बाद महीनों और वर्षों तक निर्णय नहीं आता, कहीं महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्नों का अंतिम समाधान किए बिना मामला अधीनस्थ अदालत में भेज दिया जाता है। यह धारणा सही है या गलत, इसकी निष्पक्ष समीक्षा स्वयं न्यायापालिका को करनी चाहिए। न्यायापालिका की विश्वसनीयता केवल इस बात से नहीं बचेगी, वह अपनी निष्पक्षता का दावा करे। सुप्रीम कोर्ट के जज भगवान भी नहीं हैं। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के जजों के दिए गए फैसले और कार्यों की न्यायिक समीक्षा होनी चाहिए। फैसलों और कार्यप्रणाली में निष्पक्षता स्पष्ट रूप से दिखनी भी चाहिए, उसकी जवाबदेही भी होनी चाहिए। सरकार के विरुद्ध याचिका दायर करने वाला नागरिक पहले ही सता और संसाधनों के असमान मुकाबले में खड़ा होता है। 70 फीसदी मामलों में सरकार के खिलाफ मामलों में अदालत में जाते हैं। सरकारों के पास असीमित शक्ति होती है। याचिकाकर्ता अधिकांश मामलों में निर्बल होता है। उसको कानून और अपने अधिकारों का भी ज्ञान नहीं होता है। ऐसी दयनीय स्थिति में उसे वर्षों तक

न्यायालय के दरवाजे पर न्याय का इंतजार करना पड़े, तो उसके कानूनी अधिकार का महत्व ही समाप्त हो जाता है। चुनावी विवादों में कार्यकाल पूरे हो जाते हैं, नीतियों के प्रभाव स्थायी हो जाते हैं, नागरिकों के अधिकार प्रभावित होते हैं, अंतिम फैसला नहीं आता है। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट तक जाने के बाद भी जब उसे न्याय नहीं मिलता है, ऐसी स्थिति में न्याय पर भरोसा कमजोर पड़ जाता है। समाज आदमी न्याय पाने के लिए नेताओं और अपराधियों के दरवाजे खटखटाने लगता है। संविधान पीठ के निर्णय पूरे देश की न्यायिक व्यवस्था के लिए नजीर बनते हैं। इसलिए इनके लिए समयबद्ध सुनवाई, फैसले सुनाने की स्पष्ट समय-सीमा और लंबित मामलों की नियमित समीक्षा आवश्यक है। जिन मामलों में फैसला सुरक्षित है, उनकी स्थिति भी सार्वजनिक और जवाबदेह होनी चाहिए। न्यायापालिका को यह सुनिश्चित करना होगा कि सरकार हो या नागरिक, दोनों पक्षों को अनिश्चितकालीन न्यायिक देरी का लाभ न मिले। यह तभी हो सकता है, जब समय पर न्याय हो।

पीएनबी का लागत-आय अनुपात घटाने पर जोर

2029 तक 45 फीसदी का लक्ष्य

नई दिल्ली ।

सार्वजनिक क्षेत्र के पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ने अपनी परिचालन दक्षता और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए चालू वित्त वर्ष में लागत-आय अनुपात को 50 प्रतिशत से नीचे लाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। बैंक के एक अे धिकारी ने बताया कि इसे वित्त वर्ष 2028-29 तक घटाकर लगभग 45 प्रतिशत पर लाने की योजना है। अे धिकारी के अनुसार, चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में यह अनुपात 50.38 प्रतिशत रहा है। बैंक खर्चों के युक्तिसंगत प्रबंधन और मुनाफे को अधिकतम करने पर केन्द्रित है। इसके लिए सभी इकाइयों को परिचालन दक्षता बढ़ाने के महत्व के प्रति जागरूक किया जा रहा है। बैंक जमा पर लागत, ऋण से आय, शुल्क-आधारित आमदनी और परिचालन खर्च घटाने के उपायों पर नियमित रूप से चर्चा करता है। पीएनबी अब सुनियोजित तरीके से लागत कम करने में जुटा है। बैंक का लक्ष्य अगली कुछ तिमाहियों में 6,000 करोड़ रुपये का लाभ हासिल करना है। पीएनबी ने हालिया तिमाहियों में परिचालन लाभ और शुद्ध मुनाफे में निरंतरता दिखाई है। पिछली एक तिमाही में बैंक का शुद्ध लाभ 5,532 करोड़ रुपये तक पहुंच गया, जो अब तक का सर्वाधिक है, भले ही उसे 1,000 करोड़ रुपये के ट्रेजरी नुकसान का सामना करना पड़ा। बैंक को उम्मीद है कि यह सकारात्मक रूझान भविष्य में भी जारी रहेगा, जिससे शुद्ध लाभ में और वृद्धि होगी।

पांच साल में भारत को अपने शीर्ष 10 बाजार में शामिल करेगी ब्राउन-फॉर्मन

- प्रीमियम मांग, एफटीए से नाए अवसर; जैक डेनियल्स की मालिक कंपनी लाएगी और ब्रांड

नई दिल्ली ।

अमेरिकी स्पिरिट दिग्गज ब्राउन-फॉर्मन ने अगले पांच वर्षों में भारत को अपने स्कॉच व्हिस्की पोर्टफोलियो के लिए दुनिया के शीर्ष 10 बाजारों में शामिल करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। कंपनी को भारत में प्रीमियम शराब की बढ़ती मांग, अंतरराष्ट्रीय ब्रांडों के प्रति उपभोक्ताओं की रुचि और भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) से महत्वपूर्ण विस्तार के अवसर मिलने की उम्मीद है। जैक डेनियल्स जैसे प्रसिद्ध ब्रांडों की मालिक ब्राउन-फॉर्मन ने इसी साल मई में अपने प्रीमियम सिंगल माल्ट स्कॉच द ग्लेनड्रोनाच के साथ भारतीय बाजार में प्रवेश किया था। अब कंपनी की योजना ‘बेनरियाक’ और उसके बाद ‘स्लेंग्लास’ को भी भारत में पेश करने की है। ब्राउन-फॉर्मन के माल्ट्स एंड आयरिश के एक अे धिकारी ने पुष्टि की कि भारत कंपनी की दीर्घकालिक स्कॉच रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यहाँ व्यापक संभावनाएं मौजूद हैं। कंपनी का मानना ​​है कि भारतीय उपभोक्ता अब सिर्फ कीमत नहीं, बल्कि गुणवत्ता और उत्पाद की विशिष्टता को महत्व दे रहे हैं, जिससे प्रीमियम सिंगल माल्ट की मांग बढ़ रही है। भारत-ब्रिटेन एफटीए भी कंपनी के लिए बेहद अहम है। 15 जुलाई, 2026 से प्रभावी होने के बाद ब्रिटिश स्कॉच व्हिस्की पर आयात शुल्क 150 प्रतिशत से घाटकर 75 प्रतिशत हो जाएगा, जिससे बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी। ब्राउन-फॉर्मन भविष्य में आयरिश व्हिस्की, जिन और टक्कीला जैसी श्रेणियों में भी अवसर तलाशने की योजना बना रही है।

कार्ल्सबर्ग इंडिया का मुनाफा 22 फीसदी बढ़ा, आमदनी घटी

- आमदनी में मामूली गिरावट के बावजूद कंपनी ने दर्ज किया उछाल

नई दिल्ली ।

बीयर निर्माता कार्ल्सबर्ग इंडिया ने अपने प्रस्तावित आर्थिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) से ठीक पहले वित्त वर्ष 2025-26 में मजबूत वित्तीय प्रदर्शन दर्ज किया है। कंपनी का मुनाफा 22 प्रतिशत बढ़कर 534.51 करोड़ रुपए रहा, जबकि आमदनी में मामूली गिरावट देखी गई। टॉफलर से प्राप्त वित्तीय आंकड़ों के अनुसार इस अवधि में कंपनी की कुल आमदनी 2.2 प्रतिशत घटकर 8,708.8 करोड़ रुपए रही। हालांकि, खर्चों पर प्रभावी नियंत्रण रखने से कुल व्यय लगभग चार प्रतिशत घटकर 8,090.81 करोड़ रुपए हो गया। सरकार को दिए जाने वाले आबकारी शुल्क में करीब 12 प्रतिशत की कमी (4,816.83 करोड़ रुपए) इसका एक प्रमुख कारण रहा। वहीं बिज्नी प्रोत्साहन पर खर्च 42.62 प्रतिशत बढ़कर 848.71 करोड़ रुपए रहा और मूल कंपनी को रॉयल्टी 13.23 प्रतिशत बढ़कर 90.01 करोड़ रुपए हो गई। डेनमार्क के कार्ल्सबर्ग समूह की यह अनुपंगी इकाई, जो ट्यूबर्ग और कार्ल्सबर्ग एलिफेंट जैसे लोकप्रिय ब्रांड बेचती है, ने जुलाई 2026 में सेबी के पास गोपनीय आईपीओ दस्तावेज जमा किए थे। इसे 1 अक्टूबर, 2026 को मंजूरी मिल गई, और कंपनी की योजना आईपीओ के जरिए करीब 70 करोड़ डॉलर जुटाने की है।

शेयर बाजार में पारदर्शिता और निवेशकों की सुरक्षा के लिए सेबी के बड़े बदलाव

नई दिल्ली ।

आम निवेशकों की सुख्या को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए, शेयर बाजार नियामक सेबी ने बाजार में होने वाले गलत कार्यों पर लगाम लगाने के लिए बड़े बदलावों की घोषणा की है। सेबी अब ट्रेडिंग टर्मिनल के दुरुपयोग को रोकने और ब्रोकरों के लिए उनके जोखिम के हिसाब से नियम बनाने की तैयारी में है। इन कदमों से बाजार में पारदर्शिता बढ़ने और निवेशकों के हितों की रक्षा होने की

उम्मीद है। सेबी के चेयरमैन तुहिन कांत पांडेय ने स्पष्ट किया है कि ट्रेडिंग टर्मिनल के गलत इस्तेमाल को जड़ से खत्म करने के लिए एक बेहद सख्त नया फंक्चर लाया जा रहा है। इसका मुख्य लक्ष्य बाजार में पारदर्शिता सुनिश्चित करना और आम निवेशकों के पैसे को सुरक्षित करना है। सेबी उन ब्रोकरों पर नकेल कसने की तैयारी में है जो अपने खातों का इस्तेमाल कर दूसरे ट्रेडरों को चोरी-छिपे ट्रेडिंग

कंपनियों के तिमाही नतीजे और कच्चा तेल तय करेंगे शेयर बाजार की दिशा

जियो प्लेटफॉर्मर्स की लिस्टिंग और औद्योगिक उत्पादन के आंकड़े भी डालेंगे असर

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार के लिए यह सप्ताह बेहद अहम और चुनौतियों भरा रहने वाला है। अमेरिकी फेडरल रिजर्व के ब्याज दर के फैसले, कंपनियों के तिमाही नतीजों, कच्चे तेल की कीमतों की दिशा और पश्चिम एशिया के भू-राजनीतिक घटनाक्रम इस सप्ताह बाजार की चाल तय करेंगे। पिछले कारोबारी सत्रों वाले सप्ताह में घरेलू शेयर बाजार में भारी गिरावट दर्ज की गई थी, जिसके बाद निवेशकों की धारणा पर इन घटनाक्रमों का सीधा असर दिखेगा। विश्लेषकों के अनुसार

28 अक्टूबर को होने वाली अमेरिकी फेडरल रिजर्व की ब्याज दर संबंधी घोषणा वैश्विक बाजारों के लिए सबसे महत्वपूर्ण घटनाक्रम होगी। हालांकि बाजार में ब्याज दर में बदलाव की उम्मीद कम है, फिर भी फेड का नीतिगत बयान और भविष्य को लेकर उसके संकेत निवेशकों के लिए अहम होंगे। यदि अमेरिकी केंद्रीय बैंक महंगाई पर सख्त रुख बनाए रखता है, तो अमेरिकी बॉण्ड प्रतिफल और डॉलर में मजबूती आ सकती है, जिससे उभरते बाजारों से विदेशी निवेश का प्रवाह प्रभावित हो सकता है। घरेलू मोर्चे पर कई बड़ी कंपनियों जैसे

टीवीएस मोटर, एशियन पेंट्स, सन फार्मा, इंडियन ऑयल और बैंक ऑफ बड़ौदा समेत कई दिग्गज कंपनियां इस सप्ताह अपने वित्तीय परिणाम घोषित करेंगी। इनके नतीजे बाजार की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इसके अलावा 28 अक्टूबर को जारी होने वाले सितंबर माह के औद्योगिक उत्पादन (आईआईपी) और विनिर्माण उत्पादन के आंकड़े भी अर्थव्यवस्था की सेहत का संकेत देंगे। इस बीच रिलायंस समूह की जियो प्लेटफॉर्मर्स का शेयर 28 अक्टूबर को शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव रहने की संभावना है।

एफपीआई ने अक्टूबर में भारतीय शेयर बाजार से 48,056 करोड़ निकाले

कच्चे तेल की कीमतें, भू-राजनीतिक तनाव और महंगाई चिंता का सबब

नई दिल्ली ।

भारतीय शेयर बाजार से विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) की निकासी अक्टूबर माह में भी जारी रही है, जिसने बाजार पर दबाव बनाए रखा है। चालू माह में अब तक एफपीआई ने भारतीय इक्विटी बाजार से 48,056 करोड़ रुपये की बड़ी राशि निकाली है। इसके साथ ही, इस साल भारतीय बाजार से उनकी कुल निकासी 3.08 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर गई है, जो पिछले साल की 1.66 लाख करोड़ रुपये की निकासी से काफी अधिक है। विशेषज्ञों के अनुसार वैश्विक स्तर पर बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, खासकर पश्चिम एशिया में अशांति, कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें (जो

एक समय 114 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई थीं), बढ़ती महंगाई की आशंकाएं और भारतीय कंपनियों के कमजोर तिमाही नतीजे विदेशी निवेशकों की बिकवाली को बढ़ावा दे रहे हैं। हालांकि, पिछले सप्ताह विदेशी निवेशकों की बिकवाली की रफ्तार में उल्लेखनीय कमी देखी गई और दो कारोबारी सत्रों में वे शुद्ध खरीदार भी रहे।

बाजार के जानकारों के मुताबिक, अमेरिकी बॉण्ड प्रतिफल में गिरावट (5.36 प्रतिशत से लगभग पांच प्रतिशत पर), रुपये में मजबूती (94.94 प्रति डॉलर तक) और आकर्षक शेयर मूल्यांकन जैसे कारकों ने बिकवाली को धीमा किया। निवेश मंच ‘ट्रैक’ ने इस स्थिति पर अधिक चिंता न जताने की सलाह

फिक्की ने नीदरलैंड से भारत में विनिर्माण,तकनीक निवेश बढ़ाने का किया आह्वान

नई दिल्ली ।

भारतीय उद्योग संगठन फिक्की ने नीदरलैंड से भारत के विनिर्माण और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में निवेश बढ़ाने का आह्वान किया है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल की नीदरलैंड यात्रा के बीच, फिक्की ने द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को मजबूती देने के लिए संयुक्त उद्यमों, प्रौद्योगिकी साझेदारी और आपूर्तिकर्ता विकास कार्यक्रमों पर विशेष जोर दिया है। फिक्की के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि गोयल की यह यात्रा निवेश संबंधी चर्चाओं को ठोस परियोजनाओं में बदलने में मदद कर सकती है।

फिक्की ने चार प्रमुख क्षेत्रों- विनिर्माण साझेदारी, प्रौद्योगिकी सहयोग, आपूर्ति श्रृंखला एकीकरण और परियोजनाओं पर आगे की कार्रवाई, में प्रगति की उम्मीद जताई है। संगठन ने इंजीनियरिंग, उपकरण और खाद्य प्रसंस्करण जैसे प्रौद्योगिकी-प्रधान उद्योगों में संयुक्त उद्यमों तथा उत्पादन क्षमता विस्तार से जुड़ी परियोजनाओं की सूची तैयार करने का आह्वान किया। इसके साथ ही नए उत्पादों के विकास और घरेलू इंजीनियरिंग क्षमताओं को मजबूत करने के लिए कंपनियों, शोध संस्थानों और स्टार्टअप के बीच साझेदारी पर भी जोर दिया गया। उन्होंने भारतीय



सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों (एमएसएमई) को नीदरलैंड की कंपनियों की गुणवत्ता और टिकाऊपन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाने हेतु आपूर्तिकर्ता विकास कार्यक्रम शुरू

करने का सुझाव दिया। उन्होंने निवेश प्रस्तावों को वास्तविक परियोजनाओं में बदलने के लिए स्पष्ट लक्ष्य, संबंधित पक्षों की जिम्मेदारी और प्रभावी क्रियान्वयन व्यवस्था पर भी बल दिया।

वैश्विक कर्ज संकट- 34,000 लाख करोड़ का बोझ, यूरोप में बढ़ा तनाव

ब्याज चुकाने में सरकारों के छूटे पसीने, भारत की जीडीपी के 83.4 फीसदी तक पहुंचा कर्ज

-नई दिल्ली ।

दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाएं इस समय कर्ज के भारी बोझ तले दबी हुई हैं। कुल 34,675 लाख करोड़ रुपये से अधिक का कर्ज सरकारों, निजी कंपनियों और परिवारों पर है। एक रिपोर्ट के अनुसार, इस विशाल कर्ज पर बढ़ता ब्याज चुकाना सरकारों के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है, जिससे स्वास्थ्य, शिक्षा और जन-कल्याणकारी योजनाओं के बजट पर सीधा असर पड़ रहा है। फ्रांस पर विशेष दबाव कर्ज के बढ़ते बोझ और बजट कटौती के खिलाफ यूरोप के कई देशों में व्यापक विरोध प्रदर्शन देखे जा रहे हैं।

फ्रांस में आर्थिक हालात विशेष रूप से चिंताजनक हैं, जहां सरकारी कर्ज बढ़ने के कारण उधारी काफी महंगी हो गई है। अक्टूबर 2026 में फ्रांस के 10-वर्षीय सरकारी बॉन्ड की यील्ड लगभग 5 फीसदी तक पहुंच गई, जो जर्मनी के 3.41 फीसदी से काफी अधिक है। यह स्थिति 2010-2012 के यूरोजोन कर्ज संकट की याद दिलाती है, जब ग्रीस और पुर्तगाल जैसे देश

वित्तीय संकट से जूझ रहे थे। भारत की स्थिति और विशेषज्ञ राय दुनिया के प्रमुख देशों में सरकारी कर्ज का आंकड़ा भी विशाल है, जिसमें अमेरिका (3,933 लाख करोड़ रुपए) और चीन (2,137.5 लाख करोड़ रुपए) शीर्ष पर हैं। भारत पर भी 323 लाख करोड़ रुपए का सरकारी कर्ज है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के 2026 के अनुमानों के मुताबिक, भारत का कुल सरकारी कर्ज (केंद्र और राज्य) उसकी जीडीपी का 83.4 फीसदी है।

हालांकि, विशेषज्ञ केवल कर्ज के बड़े आंकड़े को संकट का प्रमाण नहीं मानते। उनका कहना है कि जपान और अमेरिकाजैसे देशों के उदाहरण बताते हैं कि वास्तविक वित्तीय सेहत ब्याज चुकाने की क्षमता, सरकारी उधारी काफ़ी महंगी हो गई है। अक्टूबर 2026 में फ्रांस के 10-वर्षीय सरकारी बॉन्ड की यील्ड लगभग 5 फीसदी तक पहुंच गई, जो जर्मनी के 3.41 फीसदी से काफी अधिक है। यह स्थिति 2010-2012 के यूरोजोन कर्ज संकट की याद दिलाती है, जब ग्रीस और पुर्तगाल जैसे देश

गौरतलब है े कि सरकारें विभिन्न विकास और कल्याणकारी योजनाओं के लिए टैक्स और अन्य आय के अलावा सरकारी बॉन्ड जारी करके बैंकों और निवेशकों से कर्ज लेती हैं।

बीयर-सॉफ्ट ड्रिंक पर एल्युमिनियम कैन का संकट

- मांग में अप्रत्याशित वृद्धि, सीमित उत्पादन और अंतरराष्ट्रीय व्यवधानों के चलते कंपनियां परेशान

नई दिल्ली (इंएमएस)। देश में बीयर और सॉफ्ट ड्रिंक्स के शौकीनों के लिए एल्युमिनियम कैन की कमी चिंता का विषय बन गई है। पैकेजिंग के लिए आवश्यक कैन जुटाने में कंपनियों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है, जो बाजार में कुछ खास उत्पादों की उपलब्धता को प्रभावित कर सकता है। पिछले दो वर्षों में कैन में पैक किए गए पेय पदार्थों की बिज्नी दोगुनी हुई है, जो अब कुल बाजार का 25 फीसदी से अधिक हिस्सा है। हालांकि, घरेलू उत्पादन इस बढ़ती मांग को पूरा करने में अक्षम है। इसके अलावा, पश्चिम एशिया में जारी युद्ध ने वैश्विक माल ढुलाई और आपूर्ति श्रृंखला को बाधित कर स्थिति और बिगाड़ दिया है। बूअर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अनुसार, 60 करोड़ अतिरिक्त कैन की उम्मीद के मुकाबले सिर्फ 30 करोड़ ही तैयार हुए। नई उत्पादन क्षमता जोड़ने में करीब एक साल लगता है, जिससे तत्काल कमी पूरी करना संभव नहीं। इस किस्मत को दूर करने के लिए कंपनियां यूएई, श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया से कैन आयात कर रही हैं। यह आयात घरेलू कैन से 25-30 फीसदी महंगा पड़ रहा है, जिससे पैकेजिंग लागत में भारी वृद्धि हो रही है। राहत की बात यह है कि बाजार से पेय पदार्थों की उपलब्धता पूरी तरह खत्म नहीं होगी। समस्या उत्पाद की नहीं, बल्कि उसे पैक करने वाले कैन की है। फिर भी, आने वाले दिनों में कुछ चुनिंदा ब्रांड्स की सप्लाई प्रभावित हो सकती है।

एफपीआई ने अक्टूबर में भारतीय शेयर बाजार से 48,056 करोड़ निकाले



दी है। उसका कहना है कि भारतीय बाजार में विदेशी निवेशकों की हिस्सेदारी पहले ही कई साल के निचले स्तर पर आ चुकी है, जबकि घरेलू निवेशकों की भागीदारी लगातार बढ़ी है। उनके अनुसार, आईपीओ में निरंतर निवेश यह दर्शाता है कि विदेशी शुद्ध निकासी की।

पीएनबी का लागत-आय अनुपात घटाने का लक्ष्य

नई दिल्ली ।

पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ने चालू वित्त वर्ष में अपने लागत-आय अनुपात को 50 प्रतिशत से नीचे लाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया है। बैंक का इशारा इसे 2028-29 तक और घटाकर लगभग 45 प्रतिशत पर लाने का है, जो उसकी परिचालन दक्षता और लाभप्रदता बढ़ाने की रणनीति का अहम हिस्सा है। बैंक के एक अे धिकारी ने बताया कि चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में यह अनुपात 50.38 प्रतिशत रहा है। पीएनबी खर्चों को युक्तिसंगत बनाने, परिचालन दक्षता बढ़ाने और लाभप्रदता पर केन्द्रित है। बैंक ने पिछली चार तिमाहियों में वित्तीय मानकों पर निरंतरता बनाए रखी है और उसका लक्ष्य अगली कुछ तिमाहियों में 6,000 करोड़ रुपए का लाभ हासिल करना है। चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में बैंक का शुद्ध लाभ सालाना आधार पर 13 फीसदी बढ़कर 5,532 करोड़ रुपए रहा, जो किसी एक तिमाही में अब तक का सर्वाधिक है। यह मुख्य आय में सुधार और खराब कर्ज में कमी से समर्थित रहा।

अंतराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल में उछाल के बावजूद भारत में ईंधन कीमतें स्थिर

दिहड़ी समेत प्रमुख शहरों में पेट्रोल-डीजल के दाम अपरिवर्तित

नई दिल्ली ।

वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में जबरदस्त उछाल के बावजूद भारतीय उपभोक्ताओं को फिलहाल राहत मिली है। रे विचार को जारी आंकड़ों के अनुसार दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई सहित देश के प्रमुख शहरों में पेट्रोल और डीजल के दाम अपरिवर्तित बने रहे, जबकि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में ब्रेट क्रूड 116 डॉलर प्रति बैरल के पार कारोबार कर रहा था। देश के प्रमुख शहरों में पेट्रोल-डीजल की कीमतें स्थिर बनी हुई हैं। दिल्ली में पेट्रोल 102.12 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.20 रुपये प्रति लीटर पर अपरिवर्तित रहा। इसी तरह मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और पटना जैसे अन्य प्रमुख शहरों में भी दरें उस की तस रही। शहरों में कीमतों का अंतर स्थानीय करों और अन्य लागतों के कारण बना हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें ऊंचे स्तर पर बनी हुई हैं, जहां 24 अक्टूबर को ब्रेट क्रूड का भाव 116.93 डॉलर प्रति बैरल और अमेरिकी बेंचमार्क डब्ल्यूटीआई क्रूड का भाव 103.44 डॉलर प्रति बैरल दर्ज किया गया। यह समझना

महत्वपूर्ण है कि कच्चे तेल की कीमत को सीधे प्रति लीटर ईंधन से नहीं जोड़ा जा सकता, क्योंकि इसमें रिफाईनिंग, परिवहन, रुपये-डॉलर विनिमय दर, केंद्र व राज्य सरकारों के कर और डीलर कमीशन जैसे कई कारक शामिल होते हैं। कच्चे तेल के ऊंचे स्तर पर बने रहने के बावजूद कीमतों में यह स्थिरता कई कारकों का परिणाम है। तेल कंपनियां केवल कच्चे तेल की लागत ही नहीं, बल्कि परिचालन खर्चों और बाजार की स्थितियों को भी ध्यान में रखती हैं। भारत कच्चे तेल का एक बड़ा हिस्सा विदेशों से आयात करता है, इसलिए रुपये के कमजोर होने पर आयात महंगा हो जाता है। साथ ही, केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा लगाए गए विभिन्न कर भी अंतिम उपभोक्ता मूल्य को प्रभावित करते हैं। विशेषज्ञों का मानना ​​है कि वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव और प्रमुख तेल उत्पादक देशों के फैसले कच्चे तेल की कीमतों को आगे भी प्रभावित कर सकते हैं। चूंकि भारत बड़े पैमाने पर कच्चे तेल का आयात करता है, इसलिए लंबे समय तक उच्च कीमतें आयात बिल और अंततः ईंधन की लागत पर दबाव बढ़ा सकती हैं।

- अगले सप्ताह कुल 4 दिन तक बैकिंग सेवाएं प्रभावित

नई दिल्ली ।

अगले सप्ताह यदि आपका बैंक से जुड़ा कोई महत्वपूर्ण काम है, तो सावधानी बरतें। 26 अक्टूबर से शुरू हो रहे नए सप्ताह में देश के अलग-अलग राज्यों में विभिन्न कारणों से बैंक अवकाश रहेगा, हालांकि देशभर में सभी बैंक

बंद नहीं रहेंगे। सोमवार, 26 अक्टूबर को जम्मू-कश्मीर में विलय दिवस, त्रिपुरा में लक्ष्मी पूजा और चंडीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक व मध्य प्रदेश में महर्षि वाल्मीकि जयंती के अवसर पर बैंक बंद रहेंगे। उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार, महाराष्ट्र और राजस्थान में बैंक सामान्य रूप से खुले रहेंगे। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा घोषित अवकाशों के

अनुसार, 26 अक्टूबर से 1 नवंबर के बीच बैंक कुल चार दिन बंद रहेंगे। इस कड़ी में 29 अक्टूबर को हिमाचल प्रदेश में कर्वा चौथ और 31 अक्टूबर को गुजरात में सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती के कारण भी बैंक बंद रहेंगे। ग्राहकों को सलाह है कि वे असुविधा से बचने के लिए अपने राज्य में अवकाश की पुष्टि करके ही बैंक जाएं।

कष्ट में ही होते हैं प्रभु के दर्शन

भक्तों को सदैव कष्ट में ही प्रभु के दर्शन हुए हैं। अतः सच्चा भक्त भगवान से दुःख ही दुःख मांगता है। संकट का समय भक्त की परीक्षा काल होता है। नृसिंह भगवान के दर्शन प्रह्लाद को दुःख ही हुए थे। ध्रुव यदि अपनी सौतेली माँ से अपमानित न होते तो उन्हें प्रभु-प्राप्ति कैसे होती। अहिल्या पाषाण-मूर्ति होकर ही प्रभु-स्पर्श की अधिकारिणी बनकर प्रभु को प्राप्त कर सकी। प्रभु अपने प्रिय भक्तों के संकट देख नहीं सकते। उन्हें भक्त की आर्त पुकार सुनकर नंगे पैर दौड़कर आना ही पड़ता है। भगवान श्री कृष्ण गीता में कहा है। कि सगुणोपासक भक्तों की भगवान नन्हें शिशु की तरह रक्षा करते हैं। अतः ज्ञान पाकर भी पंडित भक्ति नहीं छोड़ते। भक्ति मार्ग में सबसे सरल, सुगम, साधन प्रभु का नाम-स्मरण बताया गया है। पूर्ण स्वेण प्रभु के अधीन हो उनके नाम स्मरण से जीव को शाखत सुख की प्राप्ति होती है। कलियुग में भवसागर पार करने का एक मात्र सुगम साधन यही है। गोरवामी तुलसी दास जी ने श्री राम चरित मानस में प्रभु के नाम-स्मरण की महिमा का स्थान-स्थान पर वर्णन किया है। भगवान नाम-साधना एवं भगवान नाम स्मरण से प्राणी में अलौकिक दिव्य प्रकाश का उदय होता है। जिसकी जिक्रा के अग्रभाग में हरि' ये दो अक्षर विराजमान रहते हैं वह विष्णुलोक को प्राप्त करता है। ऐसे मनुष्य का पुनः जन्म नहीं होता। साधक जो फल तपस्या, योगाभ्यास और समाधि द्वारा भी प्राप्त नहीं कर पाता वह फल केवल हरिनाम- कीर्तन के अत्यन्त सरल उपाय से तत्काल प्राप्त कर लेता है। कलियुग में तो हरिनाम कीर्तन की ही विशेष महिमा है।



भगवन्मय है सारा संसार



अज्ञान जनित योगलोलुपता के अहंकार ने हमारे ज्ञान को ढक लिया है और चारों ओर से इस अंधकार को और भी धन करने की भरसक कोशिश हो रही है। इस अंधकार की घनता को ही ज्ञान का प्रकाश कहा जाता है। मनुष्य की वृद्धि आज उल्लू और चमगादड़ की दृष्टि जैसी हो गई है। जैसे इन पक्षियों को दिन में अंधेरा और रात को प्रकाश नजर आता है, वैसे ही हमें आज अंधकार में ही प्रकाश का भ्रम हो रहा है। इसी से हम ' कामोपयोगपरायण होकर सैकड़ों आशा की फासियों में बंधे हुए काम-क्रोधादि साधनों से "कामयोगार्थ" अन्यायपूर्वक अर्थ प्राप्ति के उपायों में लगे रहे हैं। मोह ने हमें घेर लिया है, अभिमान ने हमें अंधा कर दिया है। लोग ने हमारी वृत्ति को बिगाड़ दिया है। मद ने हमें उन्मत्त बना दिया है। इसी से हम आज अहंकार, बल, दुर्प, काम, क्रोध का आश्रय लेकर सर्वभूतस्थित भगवान के साथ देश करने लगे हैं। इन आसुरी भावों का परिणाम नरक की यंत्रणाएं और अधम गति के सिवा और क्या हो सकता है? उपाय क्या है? उपाय है भगवदाराधन जिन लोगों को भगवान में कुछ भी विश्वास है वे वे सबकी ऐसी वृद्धि होने के लिए भगवान से सरल श्रद्धायुक्त आकुविम प्रार्थना करें, उठते हुए भगवद् विखाज को अपने शुभ आचरण और सच्ची भक्ति के द्वारा फिर जमायें भगवत् श्रद्धा के सूखते हुए वृक्ष की जड़ को सच्ची निर्भरता की अश्रुजल-धास से खींचें। आप्तवचनों पर श्रद्धा करें। ऋषिमुनियों को भ्रान्त मानना छोड़ दें। जीवन को तप संयम से पूर्ण बनाकर भगवन् कृपा का आश्रय ग्रहण करें। अटल विश्वास तथा परम श्रद्धा के साथ भगवान के श्रीचरणों की सेवा करें। और उनके पवित्र नाम का जाप करें। मनुष्य को सावधान होकर यह सोचना चाहिए कि यहां सभी योग-सुख अनित्य हैं, बिजली की भांति चंचल हैं। शरीर कच्चे घड़े के समान अचानक जरा सी ठेस लगते ही नष्ट हो जाने वाला है। इसलिये भोगों से मन हटाकर भगवान में प्रेम करें। संसार के लिए भगवान को भी न भुलाया जाए। भगवान के लिए संसार को छोड़ना पड़े तो आपत्ति नहीं, परंतु संसार के लिए भगवान कभी न छूटें। यदि मनुष्य इस प्रकार निश्चय कर ले तो फिर संसार को छोड़ने की भी जरूरत नहीं पड़ती सारा संसार भगवन्मय ही तो है।

आज भोगों के लिए तप होते हैं

हमारा पूरा जीवन ही भौतिकवादी हो गया है। ब्राह्म वस्तुओं के लिए, इन्द्रिय भागों के लिए वह बिक गया है। मांस के टुकड़ों के लिए चील-कौओं की भांति लड़ाई होने लगी है। किसी जमाने में परमात्मा प्राप्ति के लिए तप किए जाते थे लेकिन आज भोगों की प्राप्ति के होते हैं। कभी भगवान के प्रति आत्म समर्पण होता था, आज भोगों की प्रतिमा पूजी जाती है। कभी देहरातबोहा छोड़कर ब्रह्मात्मबोध किया जाता था अब ब्रह्माबोध की जरूरत नहीं समझी जाकर उस रास्ते के पथिकों को भी देहात्मबोध की शिक्षा दी जाती है। बड़े-बड़े मनीषी तपस्वी संयसी पुख्ख भी आज भोगों की प्राप्ति करने-कराने के लिए जीवन की और धर्म की बाजी लगाये बैठे हैं। एवं इसी को धर्म समझा जा रहा है। पर योगपरायणता-इन्द्रिय सुख परता का परिणाम क्या होता है। मनुष्यों में राक्षसी भावों का उदय, हेप-हिंसा प्रविर्हिंसा का प्राबल्य, घोर अशांति ओर सुख के नाम पर दुःख पूर्ण जीवन यापन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण भोग सुख और भौतिक सत्ता सामर्थ्य से सम्पन्न समुन्नत कहने वाले देशों की भी बुरी दशा है। परंतु इस दशा को देखना होगा ईश्वरामिमुखी ज्ञान सम्पन्न तप-वि-नेगों पर जाले तो छा ही गये हैं। चांहे वह बुरी-से बुरी हों ऐसा जादू छाया है कि उसने हृदय को ही पराया बना दिया। इसी के परिणाम-स्वरूप आज हम वहां के अनाचार में सदाचार पाप में पुन्य, स्वार्थन्धता में देशभक्ति, अवनिर्त में उन्नति अधर्म में धर्म और पतन में उत्थान का विपरीत हृदय देख रहे हैं। और बस और उसी के प्रवर्तन की अन्धचेष्टा में तत्पर हैं।



प्रभु सर्वान्तर्यामी है

हृदय में परमात्मा का अनुभव हो जाने पर कण कण में वहीं नजर आता है यही सच्चा अनुभव है परमात्मा सम्पूर्ण दिव्य गुणों से युक्त होते हुए भी सम्पूर्ण गुणों से परे हैं निलिप्त है, इसलिए उन्हें निर्गुण कहा गया है बुद्धिप्रधान व्यक्ति ज्ञानमार्ग का आश्रय लेकर परमात्मा को निर्गुण मानता है परन्तु हृदयप्रधान भावुक भक्त परमात्मा को सगुण मानता है। निराधार नाम, रूप, गुण के अभाव में प्रभु तारतम्य कैसे हो सकता है ? प्रेमाभक्ति के द्वारा जीव भगवान से जुड़ जाता है भक्ति का अर्थ भगवान से योग बताया गया है। सम्पूर्ण जगत व्याप्त परमात्मा की सत्ता का ज्ञान तथा आनन्द हमारे संबंध को जगत से विभक्त करके भगवान के साथ संबंध कराते हैं यही भक्ति है। प्रेमपूर्वक भजन करना भक्ति है ऐसी स्थिति में भगवान के अलावा समस्त सांसारिक बंधन उसके लिए गौण हो जाता है। संसार में यदि भक्त का किसी और से कहीं भी संबंध है तो वह केवल भगवान के नाते ही है। भगवान के साथ सेवा प्रेम एवं विश्वास का संबंध जोड़ लेना ही भक्ति योग है। योग अर्थात् हुडे रहना, अनवरत प्रयत्नशील रहना। चेतना अथवा अचेतावस्था प्रत्येक समय स्थायीस्व से भक्ति भावना का बने रहना शुद्ध भक्ति है। जैसे परिवार के सदस्यों के प्रति सोते, जागते, उठते, बैठते एक स्थायी प्रेम सदा बना रहता है। पुत्र पास हो या दूर, उसका प्रेम तो उतना ही रहता है। वह प्रेम विस्मृति से नष्ट नहीं होता। यह रागात्मक संसार है। भक्ति भी ऐसी ही होनी चाहिए। ऐसी भक्ति रखने वाले भक्त के पीछे स्वयं भगवान चक्कर लगाते हैं।निर्बल साधक के लिए शरणगत होकर प्रभु का स्मरण करना ही एकमात्र अवलम्बन रहता है जिस प्रकार मछली जल के लिए तड़पती है जैसे पुत्रशोक के विहल होकर माता पिता आकुल व्याकुल होते हैं उसी प्रकार सच्चा साधक प्रभु के लिए मन ही मन तड़पता रहता है। उसके लिए सुख दुख समान हो जाते हैं। वह सब कुछ कृष्णार्पण कर केवल भक्ति मांगता है उसे विश्वास रहता है कि प्रभु सर्वान्तर्यामी है वे जो कुछ करेंगे उसके हित में ही करेंगे।

मनुष्य सुख प्राप्ति के यत्न में उलझा

जिंस और मन की गति होती है। उसी ओर प्राणशक्ति का प्रवाह होता है। यदि आप चुपचाप बैठे हुए अपने-आप में कुछ बाहर संसार की सोच रहे हैं। तो ऐसी सोच करने की अवस्था में आपका प्राण भी अपने ही प्रकार से कुछ घुटा-घुटा सा चलता है। परंतु जब आप चिंता रहित की अवस्था में बैठे हैं तो उस समय आपका प्राण भी बड़े आराम से चलता है। कारण कि मन बाहर की उलझन से रहित होकर किसी प्रकार की भी सोच न करता हुआ अपने आप में अंदर रहता है। जिस-जिस प्रकार से मनुष्य के अंदर भय,शोक, राग, द्वेष आदि का कोई ज्ञान होता है। तो उसी ज्ञान के दृग से उसके अंदर उसकी प्राण शक्ति अर्थात् देह का काम चलाने वाली क्रियाशक्ति करती है। यदि आपका ज्ञान बाहर के प्राणी तथा पदार्थों में भटका हुआ है। तो समझें उसके साथ आपका धास भी बाहर ही भटक रहा है। जब प्राण बाहर के ज्ञान के साथ, भटका हुआ है तो उसकी शक्ति भी बाहर ही भटकी हुई रहेगी। वह अपने अंदर एकलित नहीं हों पायेगी। यदि मन बाहर संसार से बिना किसी निमित्त के मुक्ति पा जाय तो उसका बाहर से मुक्त प्राण भी देह के अंदर एकलित होगा और उस प्राण शक्ति का अपने अंदर ही इकठा होने का सुख होगा, जैसा कि निंदा में होता है। परंतु बच्चे को तो बचपन से ही बाहर से प्राणी तथा पदार्थों के सहारे ही सुख लेने की आदत पड़ी हुई है। और इन तुच्छ सुखों के माप तथा अंतिम परिणाम के बारे में उसका कुछ भी ज्ञान नहीं है। यदि यह ज्ञान कोई मनुष्य अपने अंदर जगा ले कि बाहर के प्राणियों एवं पदार्थों से मिलने वाले सुख थोड़ी देर रहने वाले हैं। और उन्त में ये सुख-दुःखों में ही समाप्त होते हैं। तो इस प्रकार का अन्तर्ज्ञान होने का नाम ही विवेक या सत्य का ज्ञान है। यदि इस ज्ञान से उसकी बाहर से मुक्ति हो जाय अर्थात् मन संसार में कहीं भी बंधा न रहे तो उसकी प्राणशक्ति भी अपने आप अंदर सुख भी प्रकट करेगी। परंतु मनुष्य बाहर संसार में ही उलझा-उलझा कर्म करता हुआ सुख प्राप्त करने का यत्न करता रहता है।

कर्म अपनी छाप छोड़ता है

मनुष्य बाह्य संसार में जो कुछ भी कर्म जैसे रिश्ते-नाते जोड़ना तथा कई प्रकार के पदार्थों के साथ ही उनको प्राप्त करने के लिए संबंध जोड़ना इत्यादि करता है या अभी तक उसने किया है, वे सब कर्म वही पर करने के साथ समाप्त नहीं जो जाते अर्थात् प्रत्येक किया गया कर्म अपनी एक छाप अंदर छोड़ जाता है। अब उन सब किये गये कर्मों ने आपके अंदर एक ऐसी शक्ति खड़ी कर दी है। जिसको प्रकृति से बांधने वाला एक रस्सा भी कहते हैं। इस प्रकृति शक्ति के कारण बाहर का भटकना मनुष्य को अंदर ही अंदर आत्मा का सुख पाने के लिए खोखला कर देता है अर्थात् असमर्थ बना देता है और उसकी अपना आपा कुछ खोया-खोया सा अनुभव में संसार में नहीं है। इस अवस्था में उस बाह्य संसार में अधिक भटक हुए मनुष्य को कोई सुख का अनुभव नहीं होता है, यही उसके अंदर दुख है। इस दुख से बचने के लिए वह फिर संसार में प्राणी तथा पदार्थों से ही संबंध जोड़ता है। ताकि दुख के स्थान पर वहीं पुरानी आदतों का कुछ सुख तो मिले। संसार के जिन प्राणियों एवं पदार्थों के संबंध में थोड़ा सुख मिला है मन केवल उन्हीं की स्मृतियां अपने अंदर लिये बैठा है। और वह थोड़ा सा कभी मिला हुआ सुख उसके मन से अब उतरता ही नहीं है अर्थात् मन के अंदर वह पुनः सुख लेने की लालच चिपकी हुई है जो कि बाह्य संसार में उसको बांधे हुए है। सुख को आप छोड़ दें तो उधर संसार का चिंतन ही समाप्त हो जाय और मन अपने आप में लौटना शुरूकर देगा। परंतु आलस्य, सुस्ती के कारण अविद्या में पड़ने के बाद प्रकृति तो उन्ही पुराने सुखों के संस्कार ही जगायेगी। जो अपने अंदर लिये बैठी है और बाहर संसार के प्राणी एवं पदार्थों की सोच करने के लिए प्रेरित करेगी।

यूई में 240 करोड़ की लॉटरी जीतने वाले भारतीय ने बताया, कैसे बदली उनकी जिंदगी

दुबई,एजेंसी। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) निवासी भारतीय मूल के आईटी पेशेवर अनिल कुमार बोक्षा ने 240 करोड़ की भारी-भरकम लॉटरी जीतने के बाद अपने जीवन और प्राथमिकताओं में आए बदलावों पर खुलकर बात की है। मूल रूप से तेलंगाना निवासी अनिल ने 18 अक्टूबर 2025 को यूएई लॉटरी के लकी डे ड्रॉ में 10 करोड़ दिरहम यानी करीब 240 करोड़ रुपये का यह जैकपॉट जीता था। उस समय उनकी उम्र 29 साल थी। उन्होंने कुल 12 टिकट खरीदे थे, और उनके सभी सातों नंबर विजेता नंबरों से पूरी तरह मेल खा गए थे, जिससे वह रतारोतार करोड़पति बन गए। लॉटरी जीतने के बाद अनिल ने अपनी दौलत का इस्तेमाल सबसे पहले अपने परिवार के सपनों को पूरा करने में किया। उन्होंने अपनी मां की इच्छा पूरी करते हुए उनके लिए सोने के गहने खरीदे और खेती के शौकीन अपने पिता के लिए कृषि भूमि खरीदी, ताकि वे अपनी पसंद के अनुसार जैविक खेती कर सकें। हालांकि, उन्होंने अपने पुराने पैतृक घर को बदलने के बजाय उस पैसा ही रहने दिया क्योंकि वह उनके पिता की भावनाओं से जुड़ा हुआ है। इसके अलावा, उन्होंने भारत और यूएई दोनों जगह संपत्तियां खरीदी हैं और अब वे भविष्य के लिए नए कारोबार शुरू करने के अवसरों की तलाश कर रहे हैं।

जापान के बोनिन द्वीप समूह में 7.0 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप

टोक्यो,एजेंसी। एशियाई देश जापान की धरती शनिवार, 24 अक्टूबर 2026 को एक बार फिर कांप उठी।अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) के अनुसार, जापान की राजधानी टोक्यो से लगभग 1000 किलोमीटर दक्षिण-दक्षिणपूर्व में स्थित बोनिन द्वीप समूह में 7.0 तीव्रता का एक शक्तिशाली भूकंप दर्ज किया गया।यह भूकंप 9 मिनट 31.25 सेकंड के अनुसार शाम 4 बजकर 7 स्थान पर आया। भूकंप का केंद्र जापान के बोनिन द्वीप समूह के पास, राजधानी टोक्यो के दक्षिण में समुद्र के भीतर स्थित था, जिसकी गहराई जमीन से लगभग 492.4 किलोमीटर थी। इतनी अधिक गहराई पर आने वाले भूकंप के प्रभाव आमतौर पर सतह पर कम महसूस होते हैं, जिससे जान-माल का बड़ा नुकसान होने की संभावना कम हो जाती है। हालांकि, भूकंप की तीव्रता 7.0 होने के कारण इस पर लगातार निगरानी रखी जा रही है।अमेरिकी नेशनल वेदर सर्विस ने पुष्टि की है कि हवाई और प्रभावित क्षेत्रों के लिए सुनामी की कोई चेतावनी जारी नहीं की गई है, जिससे यह एक बड़ी राहत की खबर है।अब तक, जापान में इस भूकंप से किसी तरह के जान-माल के नुकसान या बड़ी क्षति की कोई खबर सामने नहीं आई है।जापान, जो प्रशांत रिंग ऑफ फायर पर स्थित होने के कारण अक्सर भूकंप का अनुभव करता है, अपनी कठोर भूकंपरोधी निर्माण तकनीकों और त्वरित आपदा प्रतिक्रिया प्रणालियों के लिए जाना जाता है।ये प्रणालियां ऐसे शक्तिशाली भूकंपों के प्रभावों को कम करने में सहायक सिद्ध होती हैं।

सऊदी अरब में दो बांग्लादेशी नागरिकों को मृत्युदंड, ढाका ने मांगी विस्तृत जानकारी

ढाका। सऊदी अरब के मक्का क्षेत्र में दो बांग्लादेशी नागरिकों को मृत्युदंड देने के मामले में बांग्लादेश सरकार ने सऊदी अधिकारियों से विस्तृत जानकारी मांगी है।रिपोर्ट के अनुसार, दोनों नागरिकों को 14 अक्टूबर को मक्का की एक मस्जिद में कथित तौर पर अश्लीलीय कृत्य करने के मामले में दोषी ठहराने के बाद मृत्युदंड दिया गया था। रिपोर्ट के मुताबिक, जेद्दा स्थित बांग्लादेशी महावाणिज्य दूतावास ने 19 अक्टूबर को सऊदी विदेश मंत्रालय की मक्का शाखा को राजनयिक पत्र भेजकर छह सालों के जवाब मांगे।इसमें आरोपों का विवरण, घटना की तारीख और स्थान, गिरफ्तारी की तारीख तथा अदालत के फैसलों की प्रमाणित प्रतियां शामिल हैं।

दुनिया का सबसे बड़ा बैटरी से चलने वाला जहाज ‘चाइना जोरिल्ल’ सेवा में शामिल

-130 मीटर लंबा जहाज ले जा सकता है 2,100 से अधिक यात्रियों और 225 वाहनों को

ब्यूंस आयर्स,एजेंसी। दुनिया के सबसे बड़े बैटरी-इलेक्ट्रिक जहाज ‘चाइना जोरिल्ल’ ने आधिकारिक तौर पर सेवा शुरू कर दी है। ऑस्ट्रेलिया के तस्मानिया में इंकैट कंपनी द्वारा निर्मित यह जहाज दक्षिण अमेरिकी कंपनी बुकेबस के लिए संचालित होगा। इसका नाम उरुवे की प्रसिद्ध अभिनेत्री चाइना जोरिल्ल के नाम पर रखा गया है।

जहाज की लंबाई 130 मीटर और चौड़ाई 32 मीटर है। इसमें एक साथ 2,100 से अधिक यात्रियों और 225 वाहनों को ले जाने की क्षमता है। इसकी सबसे प्रमुख विशेषता इसका बैटरी आधारित संचालन है। इसमें 250 टन से



अधिक वजन की बैटरियां और 40 से 43 मेगावाट-घंटे की ऊर्जा भंडारण प्रणाली लगाई गई है। यह जहाज अर्जेंटीना की राजधानी ब्यूंस आयर्स और उरुवे के बीच रिवर प्लेट मार्ग पर चलेगा। इसके

आठ इलेक्ट्रिक वाटरजेट इंजन लगभग 25 समुद्री मील की गति प्रदान कर सकते हैं। पूरी तरह बैटरी से संचालित होने के कारण जहाज के परिचालन के दौरान प्रत्यक्ष धुआं और निकास

गैसों का उत्सर्जन नहीं होता। इससे पारंपरिक ईंधन से चलने वाले जहाजों की तुलना में स्थानीय वायु प्रदूषण और परिचालन संबंधी शोर कम करने में मदद मिल सकती है। बड़े आकार, यात्रियों और वाहनों की परिवहन क्षमता तथा बैटरी आधारित प्रणोदन प्रणाली के कारण यह जहाज समुद्री परिवहन में स्वच्छ ऊर्जा के इस्तेमाल की दिशा में महत्वपूर्ण उदाहरण है। हालांकि, इसके समय पर्यावरणीय प्रभाव का आकलन बैटरियों के निर्माण, इस्तेमाल होने वाली बिजली के स्रोत और उनके जीवनकाल के प्रबंधन जैसे पहलुओं पर भी निर्भर करेगा।

ओबामा ने ट्रंप प्रशासन पर साधा तीखा निशाना

ईरान युद्ध से लेकर व्हाइट हाउस की साज-सज्जा तक पर घेरा

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में मिडटर्म चुनावों की सरगमीं के बीच पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने डेमोक्रैटिक पार्टी के पक्ष में जोरदार मोर्चा संभाल लिया है। ओहायो में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए ओबामा ने वर्तमान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन की नीतियों और कार्यशैली पर जमकर हमला बोला। उन्होंने बढ़ती महंगाई, ईरान के साथ युद्ध, विदेश नीति और व्हाइट हाउस में किए जा रहे बदलावों को लेकर ट्रंप को घेरा, और यहां तक कि रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ पर भी व्यंग्य कसा।ओबामा ने ईरान के साथ जारी युद्ध को लेकर ट्रंप प्रशासन की रणनीति पर तीखे सवाल उठाए। उन्होंने याद दिलाया कि उनके राष्ट्रपति कार्यकाल में ईरान के परमाणु कार्यक्रम को सीमित करने के लिए एक कूटनीतिक समझौता किया गया था, जिसे उन्होंने बड़ी सफलता बताया था। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि ट्रंप प्रशासन ने जब युद्ध शुरू किया, तब दावा किया गया कि इससे ईरान के परमाणु कार्यक्रम को रोकने में मदद मिलेगी, लेकिन सात महीने बाद अमेरिकी ठिकानों और सहयोगियों पर हमले हुए, अमेरिकी सैनिकों की जान गई और मिसाइलों का भंडार घटा। उन्होंने आरोप



लगाया कि ट्रंप प्रशासन ने देश को एक ऐसे अनावश्यक संघर्ष में उलझा दिया है, जिसकी भारी कीमत अमेरिकी नागरिकों को चुकानी पड़ रही है। पूर्व राष्ट्रपति ने अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ का मजाक उड़ाते हुए उनकी दिखावटी जीवनशैली पर तंज कसा। ओबामा ने कहा कि देश की कमान ऐसे लोगों के हाथ में है, जो गंभीर राष्ट्रीय मुद्दों को सुलझाने के बजाय दिखावे, बयानबाजी और दूसरों को नीचा दिखाने में लगे रहते हैं। उनके मुताबिक, ऐसे रवैये का खामियाजा अंततः आम अमेरिकियों को भुगतना पड़ता

है। ट्रंप के व्हाइट हाउस में कराए जा रहे नवीनीकरण पर भी ओबामा ने व्यंग्य किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति को घरों की सजावट वाले टीवी कार्यक्रम में होना चाहिए, क्योंकि व्हाइट हाउस अब ऐसा दिखने लगा है, मानो सद्दाम हुसैन ने वहां चीजोंकेक फैक्ट्री खोल दी हो। ओबामा का इशारा था कि जब अमेरिकी परिवार महंगाई से जूझ रहे हैं, तब राष्ट्रपति का ध्यान नए बॉलरूम, रोज़ गार्डन में बदलाव और हर जगह सोने की सजावट जैसी प्राथमिकताओं पर केंद्रित है। ओहायो की इस रैली में ओबामा डेमोक्रैटिक उम्मीदवार एमी क्लंटन और शेरॉड ब्राउन के समर्थन में पहुंचे थे। उन्होंने मतदाताओं से रिपब्लिकन नेतृत्व को उनकी नीतियों के लिए जवाबदेह ठहराने की अपील की। ओबामा का स्पष्ट संदेश था कि मिडटर्म चुनावों के जरिए ट्रंप प्रशासन की नीतियों पर लगाम लगाने और देश की दिशा तय करने का यह एक महत्वपूर्ण अवसर है। इस तरह, बराक ओबामा ने अपने भाषण में ईरान युद्ध, बढ़ती कीमतों, रक्षा नेतृत्व और व्हाइट हाउस की साज-सज्जा जैसे मुद्दों को जोड़कर डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन को निशाने पर लिया।

डील नहीं होने पर ईरान पर हमला होना तय : ट्रंप

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका और ईरान के बीच गहराते तनाव के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने फिर तेहरान को कड़ी चेतावनी दी है। राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका ईरान पर सैन्य हमला करने पर विचार कर रहा है, हालांकि इसके साथ ही दोनों देशों के बीच बड़ा समझौता होने की संभावना भी पूरी तरह खारिज नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि ईरान समझौता करना चाहता है, लेकिन मुख्य सवाल यह है कि क्या वह इसकी शर्तों का ईमानदारी से पालन करेगा। वहीं, दूसरी ओर ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान ने अंतरिम समझौते को लेकर बातचीत टूटने के लिए सीधे तौर पर अमेरिका की नीतियों को जिम्मेदार ठहराया है। ट्रंप ने संभावित सैन्य कार्रवाई पर कहा



कि अमेरिका इस पर विचार कर रहा है और संभव है कि रविवार को ही कोई कड़ा कदम उठया जाए। हालांकि, उन्होंने हमले की योजना के बारे सीधे तौर पर कुछ भी बताने से इंकार कर दिया। ट्रंप ने कहा कि ईरान के पास

अमेरिका के साथ समझौता कर आगे की तबाही से बचने का पूरा विकल्प है। उन्होंने कहा कि उनका एकमात्र उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि ईरान भविष्य में कभी परमाणु हथियार विकसित न कर सके। उन्होंने कहा कि वह इस

समाधान को पूरी तरह स्थायी बनाना चाहते हैं, जिसके लिए दोनों ही विकल्प यानी समझौता या कार्रवाई खुले हुए हैं। इस बीच, अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने ईरान से जुड़े सुरक्षा खतरों को लेकर गंभीर चेतावनी दी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, खुफिया अधिकारियों ने विदेश विभाग को आगाह किया है कि ईरान ने वैश्विक स्तर पर अमेरिकी कर्मचारियों को निशाना बनाने की कोशिशें तेज कर दी हैं। मध्य पूर्व और अन्य क्षेत्रों में अमेरिकी नागरिकों पर जानलेवा हमले करने की साजिशें भी काफी आगे बढ़ चुकी हैं। फिलहाल अमेरिका ने अंतिम रूप से यह स्पष्ट नहीं किया है कि उसका अगला कदम क्या होगा, जिससे पश्चिम एशिया में अनिश्चितता का माहौल बना हुआ है।

सीएम बोलीं- रेप पीड़िता को 2 करोड़ का ऑफर दिया

आरोपी की जमानत के लिए जज ने ली रिश्तत

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में अजरबैजान की 20 वर्षीय महिला से कथित सामूहिक दुष्कर्म के मामले ने एक सनसनीखेज मोड़ ले लिया है, जिसने देश की न्याय व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम नवाज ने सीधे तौर पर एक जज पर मुख्य आरोपी अहमद तनवीर को जमानत दिलाने के लिए रिश्तत लेने का आरोप लगाया है। उन्होंने यह भी दावा किया कि पीड़िता को अपनी शिकायत वापस लेने

के बदले लगभग दो करोड़ पाकिस्तानी रुपये (लगभग 70,000 अमेरिकी डॉलर) की पेशकश की गई थी। इन



महिला सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया गया था, जबकि अहमद तनवीर

वाली 20 वर्षीय यह महिला सितंबर के मध्य में व्यापारिक उद्देश्य से पाकिस्तान आई थी। 25 सितंबर को लाहौर के

डिफेंस हाउसिंग अथॉरिटी इलाके में उसे एक कैफे में बुलाया गया, जहां से उसे एक फ्लैट में ले जाकर शराब पिलाई गई और फिर सामूहिक दुष्कर्म किया गया। इस मामले में पहले दो पुरुष आरोपियों और दो महिला सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया गया था, जबकि अहमद तनवीर

जमानत पर था। मुख्यमंत्री मरियम नवाज ने अहमद तनवीर की गिरफ्तारी को सही ठहराते हुए सोशल मीडिया पर लिखा, कोई भी बलात्कारी या अपराधी केवल इसलिए न्याय से बच नहीं सकता कि उसके पास पैसा है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आरोपी के संपन्न परिवार ने पीड़िता को आरोप वापस लेने के बदले दो करोड़ पाकिस्तानी रुपये देने की पेशकश की थी, जबकि उसका बयान दंड प्रक्रिया सहितता की धारा 164 के तहत पहले ही दर्ज हो चुका था।

पुलिस को धन्यवाद देते हुए बोलीं मेलोनी- प्रदर्शन ठीक पर हिंसा और अराजकता बर्दाश्त नहीं

- **इटली के कई शहरों में महंगाई, सैन्य विस्तार और रक्षा खर्च बढ़ाने के खिलाफ प्रदर्शन**
- **रोम और ट्यूरिन में प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़प**

रोम, एजेंसी। इटली में महंगाई, बढ़ते सैन्य खर्च और सेना के विस्तार के विरोध में शनिवार को कई शहरों में प्रदर्शन हुए। कुछ स्थानों पर प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच टकराव भी हुआ। इस बीच, प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने कानून-व्यवस्था बनाए रखने और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पुलिस तथा सुरक्षा बलों की सरहाना की। उन्होंने कहा कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन का

अधिकार हमेशा सुरक्षित रहना चाहिए, लेकिन नागरिकों को अपने शहरों में सुरक्षित माहौल में रहने का अधिकार भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए। मेलोनी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में पुलिसकर्मियों और सुरक्षा बलों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि सुरक्षा बलों ने देश के विभिन्न शहरों और सार्वजनिक स्थानों पर नागरिकों की सुरक्षा तथा शांतिपूर्ण प्रदर्शन के अधिकार को बनाए रखने के लिए काम किया। कुछ लोगों की ओर से झड़प और अव्यवस्था फैलाने की कोशिशों के बावजूद उन्होंने अपनी जिम्मेदारी निभाई। प्रधानमंत्री ने गुह मंत्री माटेओ फियान्टेदोरी, फ्रीफ्रेन्ट्स, फ्रेन्टर्स और कानून-व्यवस्था बनाए रखने की

कार्रवाई में समन्वय करने वाले अधिकारियों की भी सरहाना की। हिंसा रोकने के लिए प्रभावी कदमों पर जोर मेलोनी ने कहा कि मंत्रिपरिषद की ओर से हाल ही में मंजूर किए गए कदमों का उद्देश्य हिंसा रोकने और सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए राज्य को अधिक प्रभावी साधन उपलब्ध कराना है। उन्होंने कहा कि सुरक्षा सभी के लिए जरूरी है—उन लोगों के लिए भी जो शांतिपूर्वक प्रदर्शन करना चाहते हैं, उनके लिए भी जो काम करते हैं और उनके लिए भी जो बिना किसी डर के अपने शहरों में रहना चाहते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि टकराव और हिंसा फैलाने वालों के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। हालांकि, उन्होंने

शांतिपूर्ण विरोध के अधिकार को भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया। रोम, बोलोग्ना और ट्यूरिन में झड़पें इटली के मीडिया के अनुसार, शनिवार को कई शहरों में लोगों ने बढ़ती महंगाई, सैन्य विस्तार और रक्षा बजट में वृद्धि के खिलाफ प्रदर्शन किए। रोम में प्रदर्शनकारी दोपहर के समय पियाज़ा डेला रिपब्लिका से युद्ध-विरोधी मार्च के लिए निकले। शाम को शहर के केंद्र में प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़पें हुईं। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस ने पानी की बौछारें और ऑसू गैस का इस्तेमाल किया। बोलोग्ना में भी कुछ प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच टकराव



हुआ। वहीं, ट्यूरिन में प्रदर्शनकारियों ने बढ़ते सैन्य खर्च और ईंधन की कीमतों में वृद्धि का विरोध किया। वहां भी शनिवार शाम पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़पें हुईं।

केन्या में भीषण सड़क हादसा: बस और ट्रक की टक्कर में 22 लोगों की मौत, कई घायल

माकुएनी, एजेंसी। अफ्रीकी देश केन्या में रविवार सुबह हुए भीषण सड़क हादसे में करीब 22 लोगों की मौत हुई, जबकि कई अन्य घायल है।

यह दुर्घटना राजधानी नैरोबी को तटीय शहर मोम्बासा से जोड़ने वाले मुख्य राजमार्ग पर बस और ट्रक की टक्कर के कारण हुई। हादसे के बाद मौके पर अफार-तफरी मच गई। घायलों को नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया है, जहां उनका उपचार जारी है। पुलिस के मुताबिक, बस में सवार यात्री अंतिम संस्कार में शामिल होने के बाद लौट रहे थे। तभी बस और ट्रक के बीच जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों वाहन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। दुर्घटना में 22 लोगों की जान चली गई। अधिकारियों ने आशंका है कि घायलों की स्थिति गंभीर होने के कारण मृतकों की संख्या बढ़ सकती है।

ब्रिटेन ने नागरिकों को तीन दिन के आपातकाल में रहने की सलाह

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन सरकार ने हाल ही में अपने नागरिकों को एक अप्रत्याशित सलाह जारी कर आपातकालीन तैयारी के लिए सचेत किया है। बढ़ती सुरक्षा चुनौतियों, खराब मौसम की आशंकाओं और साइबर हमलों के खतरे को देखते हुए, सरकार ने अपनी नई ‘बी रेड’ मुहिम के तहत लोगों से आपात स्थिति के लिए कम से कम तीन दिन का भोजन और पर्याप्त पानी जमा रखने का आग्रह किया है। इस घोषणा का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी उच्च आपदा या आवश्यक सेवाओं के ठप होने की स्थिति में परिवार 72 घंटे तक अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। सरकार की सलाह के मुताबिक, हर व्यक्ति के लिए योजना लगभग 3 लीटर पानी की व्यवस्था होनी चाहिए, जिसका अर्थ है तीन दिनों के लिए 9 लीटर पानी का भंडारण। इसके अतिरिक्त, लोगों को लंबे समय तक चलने वाले डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ, कंबल, नकदी, एक प्राथमिक उपचार किट, बैटरी वाली टॉच और हाथ से चलने वाला एफएम रेडियो भी तैयार रखने को

कहा गया है। जानकारों के अनुसार, बिजली, इंटरनेट या भुगतान सेवाओं के बाधित होने की स्थिति में ये वस्तुएं बेहद मददगार साबित हो सकती हैं। सरकार की इस चेतावनी के पीछे कई गंभीर कारण हैं। सरकार की आशंका है कि भविष्य में चरम मौसमी घटनाओं, ऊर्जा संकट या अंतरराष्ट्रीय तनाव से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो सकता है। ब्रिटेन ने हाल के वर्षों में कई शक्तिशाली तूफानों का सामना किया है, जिनसे हजारों घरों की बिजली आपूर्ति बाधित हुई है। जनवरी में आए तूफान गोर्टी के दौरान भी मिडलैंड्स, दक्षिण-पश्चिमी इंग्लैंड और वेल्स के कई इलाकों में बिजली गूल हो गई थी। इसके अलावा, ब्रिटिश रक्षा विशेषज्ञों ने रूस और अन्य विरोधी देशों की ओर से संभावित खतरों के लिए तैयार रहने की बात कही है। उन्होंने सरकारी ढांचे, बिजली व्यवस्था, इंटरनेट और भुगतान प्रणालियों पर साइबर हमलों की आशंका भी जताई है, जिससे व्यापार और आवश्यक सेवाएं बुरी तरह प्रभावित हो सकती हैं।

वागमण सिमी प्रशिक्षण शिविर मामला : अब्दुल सुभान कुरेशी को सात साल की कठोर कैद

केरल। वर्ष 2007 के वागमण सिमी प्रशिक्षण शिविर मामले में केरल की विशेष अदालत ने आरोपी अब्दुल सुभान कुरेशी को सात साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई है। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) से जुड़े मामलों की विशेष अदालत ने फैसला आरोपी द्वारा अपने ऊपर लगे आरोप स्वीकार करने के बाद सुनाया। अदालत ने विभिन्न धाराओं के तहत सुनाई गई सजाओं को एक साथ चलाने का आदेश दिया है। विशेष अदालत के न्यायाधीश हफीज मोहम्मद ने महाराष्ट्र के ठाणे निवासी कुरेशी को विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम (यूपीए) की धारा 10(ए) के तहत एक साल तथा धारा 20 और 38 के तहत पांच-पांच साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई। इसके अलावा, विस्फोटक पदार्थ अधिनियम और भारतीय दंड संहिता की धारा 120बी के तहत भी सात-सात साल की कैद का आदेश दिया गया। अदालत ने कुछ धाराओं के तहत 25-25 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया। आरोपी पहले जेल में जितनी अवधि बिता चुका है, उस अवधि को सजा में समायोजित किया जाएगा। अभियोजन पक्ष के मुताबिक, प्रतिबंधित संगठन स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) के सदस्यों के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने की कथित साजिश में 38 आरोपी शामिल थे। इसी सिलसिले में 10 से 12 दिसंबर 2007 के बीच केरल के वागमण स्थित थंगलपारा में शिविर आयोजित किया गया था। अभियोजन ने आरोप लगाया था कि शिविर में प्रतिभागियों को गोली चलाने, बम बनाने और विस्फोटकों के इस्तेमाल का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावा, मोटरसाइकिल चलाने, चढ़ाؤون पर चढ़ने और जिहाद से संबंधित कक्षाएं आयोजित करने की बात भी सामने आई थी।

झांसी में सड़क जाम और हंगामे के आरोप में पांच किन्नर गिरफ्तार, केस दर्ज

झांसी। उत्तर प्रदेश के झांसी में बर्धाई मांगने को लेकर हुए विवाद के बाद सड़क पर हंगामा करने और यातायात बाधित करने के आरोप में पुलिस ने पांच किन्नरों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों की पहचान अनुकूल उर्फ अभिषेक, पूजा, नयनतारा रशियन, ममता और महावीरन के रूप में हुई है। पुलिस के मुताबिक, इनके खिलाफ बलाव, लोक सेवकों को चोट पहुंचाने, सरकारी काम में बाधा डालने, सार्वजनिक रास्ता अवरुद्ध करने, अश्लील हरकत और निंदाधृा के उल्लंघन से संबंधित आरोप लगाए गए हैं।

जहरीली शराब से पार्षद सहित दो की मौत, एक गंभीर

जांजगीर। छत्तीसगढ़ के जांजगीर जिले के पामगढ़ में जहरीली शराब के सेवन से पार्षद सहित दो लोगों की मौत हो गई, जबकि एक अन्य व्यक्ति की हालत गंभीर बनी हुई है। घटना के बाद क्षेत्र में हड़कंप मच गया। मृतकों के परिजनों में शोक का माहौल है। गंभीर रूप से बीमार व्यक्ति को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां चिकित्सकों की निगरानी में उसका इलाज जारी है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, शराब पीने के बाद तीनों की तबीयत बिगड़ गई। हालत गंभीर होने पर उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां दो लोगों को बचाया नहीं जा सका। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस और प्रशासन सक्रिय हो गए। जहरीली शराब के सेवन की आशंका को देखते हुए मामले की जांच की जा रही है। शराब के नमूनों की जांच और मौत के वास्तविक कारणों का पता लगाने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। घटना ने अवैध शराब के कारोबार और उसकी रोकथाम को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े कर दिए हैं।

यूपी चुनाव: सपा-कांग्रेस गठबंधन में सीट बंटवारे पर पेंच, 60 से शुरु होगा मोलभाव

लखनऊ, एजेंसी। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर समाजवादी पार्टी (सपा) और कांग्रेस के बीच गठबंधन में सीटों के बंटवारे का मुद्दा अहम होता जा रहा है। दोनों दलों के बीच सीटों की संख्या को लेकर सहमति बनाना आसान नहीं दिख रहा है। कांग्रेस जहां अधिक सीटों पर चुनाव लड़कर प्रदेश में अपनी राजनीतिक जमीन मजबूत करना चाहती है, वहीं सपा गठबंधन में अपने नेतृत्व और चुनावी रणनीति को प्राथमिकता देना चाहती है। इसके बाद सीटों के बंटवारे पर बातचीत चुनावी प्रदर्शन और जीत की संभावनाओं के आधार पर आगे बढ़ने की उम्मीद है।

चर्चाओं के मुताबिक, कांग्रेस पहले 150 से कम सीटों पर चुनाव नहीं लड़ने की बात कर रही थी, लेकिन अब उसकी दावेदारी 200 सीटों तक पहुंच गई है। दूसरी ओर, सपा अपने आकलन के आधार पर करीब 60 से 65 सीटों से बातचीत शुरू करने की तैयारी में है। हालांकि, सीट बंटवारे को लेकर दोनों दलों के बीच अंतिम सहमति सामने आना बाकी है। सपा अध्यक्ष और पूर्व सीएम अखिलेश यादव



पहले ही कह चुके हैं कि गठबंधन में सीटों की संख्या से ज्यादा महत्व जीत की संभावना का है। इसी आधार पर दोनों दलों के संगठन की सक्रियता, स्थानीय नेतृत्व, संभावित प्रत्याशियों और सामाजिक समीकरणों का आकलन किया जा सकता है। बीजे चुनावों के नतीजे भी बातचीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 399 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे, लेकिन केवल दो सीटों पर जीत मिली थी। सपा के लिए यह प्रदर्शन कांग्रेस की अधिक सीटों की मांग पर सवाल उठाने का आधार बन सकता है। वहीं, कांग्रेस वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव के नतीजों को अपनी दावेदारी के समर्थन में

रख सकती है। उस चुनाव में सपा ने 37 और कांग्रेस ने छह लोकसभा सीटों पर जीत दर्ज की थी। विधानसभा क्षेत्रों के लिहाज से सपा को 183 और कांग्रेस को 39 क्षेत्रों में बढ़त मिली थी। सपा से जुड़े सूत्रों के मुताबिक, पार्टी ने प्रदेश की सभी विधानसभा सीटों का आकलन किया है। इस आकलन में पिछली जीत के साथ संभावित प्रदर्शन को शामिल किया गया है। पार्टी को उम्मीद है कि बड़ी संख्या में सीटों पर उसकी स्थिति मजबूत रह सकती है। हालांकि, सपा के सामने अपने लोकल नेताओं और टिकट के दावेदारों को संतुष्ट रखने की चुनौती भी होगी। जिन क्षेत्रों में पार्टी नेताओं को टिकट मिलने की उम्मीद है, वहां सीट कांग्रेस के खाते में जाने से असंतोष पैदा हो सकता है। दूसरी ओर, कांग्रेस को कम सीटें मिलने पर उसके कार्यकर्ताओं में गठबंधन में सीमित भूमिका का संदेश जाने की आशंका है। इसके बाद दोनों दलों के लिए सीटों की अदला-बदली, प्रत्याशियों की स्वीकार्यता और जीत की संभावना के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण होगा।

लोकसभा अध्यक्ष बिरला ने की रूसी संसद के अध्यक्ष व्याचेस्लाव वोलोडिन से मुलाकात



नई दिल्ली, एजेंसी। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने रूस की संघीय संसद के निचले सदन स्टेट ड्यूमा के अध्यक्ष व्याचेस्लाव वोलोडिन के साथ द्विपक्षीय बैठक की। इस दौरान दोनों नेताओं ने भारत और रूस के बीच लंबे समय से चले आ रहे मैत्रीपूर्ण संबंधों को और मजबूत करने तथा दोनों देशों की संसदों के बीच सहयोग बढ़ाने के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।

बैठक में बिरला ने भारत और रूस के बीच विशेष एवं विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने दोनों देशों के राजनयिक संबंधों के 80 वर्ष पूरे होने को एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताकर आपसी सहयोग को नई ऊंचाइयों तक ले जाने पर जोर दिया। दोनों पक्षों ने माना कि नियमित संवाद और संसदीय

संपर्क द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लोकसभा अध्यक्ष ने भारत और रूस की संसदों के बीच अंतर-संसदीय आयोग की अगली बैठक आयोजित

से जुड़े मुद्दों पर सहयोग को प्रोत्साहन मिलेगा। बैठक में आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक सहयोग का मुद्दा भी प्रमुखता से उठा। बिरला ने आतंकवाद के विरुद्ध भारत का समर्थन करने के लिए रूस की प्रशंसा की। दोनों नेताओं ने इस चुनौती से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समन्वय बढ़ाने और विभिन्न देशों के साथ मिलकर प्रभावी प्रयास करने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके अलावा, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार और भारत की स्थायी सदस्यता के मुद्दे पर भी चर्चा हुई। ओम बिरला ने इस संबंध में रूस के समर्थन की सराहना की। उन्होंने भारत-रूस संबंधों को और व्यापक बनाने तथा संसदीय सहयोग को मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता पर जोर दिया।

खरगे का नीतीश पर निशाना, समाजवादी विचारधारा के नेता का संघ के साथ जाना दुखद

पटना, एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंह की 139वीं जयंती के मौके पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधकर कहा कि समाजवादी विचारधारा से निकले नेता का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की विचारधारा में विश्वास रखने वालों के साथ जाना बहुत दुखद है। कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने भाजपा और आरएसएस पर भी कई आरोप लगाए। कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने डॉ. श्रीकृष्ण सिंह को बिहार में लोकतंत्र की नींव मजबूत करने वाला प्रमुख नेता बताया। उन्होंने कहा कि श्री बाबू ने जमींदारी

प्रथा समाप्त करने और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण काम किए। उनके योगदान ने राज्य में सामाजिक न्याय को बढ़ावा दिया। कांग्रेस नेता खरगे ने आयोजन समिति का आभार जताकर कहा कि बिहार लोकतांत्रिक परंपराओं और ऐतिहासिक विरासत की भूमि है। कांग्रेस अध्यक्ष ने बिहार में कांग्रेस सरकारों के इतिहास का उल्लेख कर कहा कि 1937 में श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में पहली कांग्रेस सरकार बनी थी। इसके बाद 1947 में दूसरी सरकार स्थापित हुई। उन्होंने बताया कि ब्रिटिश शासन के दौरान मुख्यमंत्री को प्रीमियर कहा जाता था। वर्ष 1952 के पहले विधानसभा चुनाव के बाद श्रीकृष्ण सिंह मुख्यमंत्री

बने रहे और 3 जनवरी 1961 तक इस पद पर बने रहे। कांग्रेस नेता खरगे ने आरएसएस और भाजपा की विचारधारा की आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि आरएसएस की विचारधारा के रहते देश में शांति स्थापित करना मुश्किल होगा। उन्होंने बिहार की जनता से मददात सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण सरकारों के इतिहास का उल्लेख कर कहा (एसआईआर) के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन का समर्थन करने की अपील की और एसआईआर को लेकर लड़ाई को आजादी की दूसरी लड़ाई बताया। राज्यसभा सांसद खरगे ने आरोप लगाया कि भाजपा और आरएसएस देश के प्रमुख नेताओं की विरासत को कमजोर करने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने



कथित 'शुद्धिकरण' की घटना का उल्लेख कर मामले की जांच की मांग भी उठाई। खरगे ने दावा किया कि भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने जांच का आश्वासन दिया था, लेकिन बाद में राहुल गांधी के हस्तक्षेप के दौरे के दौरान उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर दी गई।

मणिपुर में शांति बहाली के लिए 36 समुदायों की समिति बनेगी: मुख्यमंत्री खेमचंद सिंह



मुख्यमंत्री ने पहाड़ी क्षेत्रों के लोगों की उत्सव में भागीदारी पर खुशी जताई। उन्होंने कहा कि कुछ लोग पहले इंग्लैंड आने से हिचकिचाते थे, लेकिन इस बार उनकी भागीदारी सकारात्मक संकेत है। 'मेरा ही चोंगबा' उत्सव विभिन्न समुदायों के बीच एकता, सद्भाव और पारस्परिक सहयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

इंग्लैंड, एजेंसी। मणिपुर में शांति, सद्भाव और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार सभी 36 समुदायों के प्रतिनिधियों को शामिल कर एक समिति गठित करेगी। मुख्यमंत्री वार्ड, खेमचंद सिंह ने इसकी जानकारी देकर कहा कि इस पहल का उद्देश्य विभिन्न समुदायों के बीच एकता और भाईचारे को बेहतर करना है।

मुख्यमंत्री ने इंग्लैंड स्थित मुख्यमंत्री सचिवालय में पहाड़ी क्षेत्रों के विभिन्न जनजातीय प्रमुखों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनसे राज्य के सभी समुदायों को एकजुट करने के लिए समिति के गठन की संभावनाओं के बारे में पूछा था। इसके बाद राज्य सरकार ने इस दिशा में पहल करने का प्रस्ताव तैयार किया। इसके पहले 'मेरा ही चोंगबा' उत्सव के तहत पैलेस कंपाउंड में पहाड़ी क्षेत्रों के जनजातीय प्रमुखों के लिए एक अतिथि गृह का उद्घाटन किया गया। मुख्यमंत्री ने पहाड़ी और घाटी क्षेत्रों के बीच आपसी विश्वास तथा भाईचारे का प्रतीक बताया। खेमचंद सिंह ने एंग्लो-मणिपुर युद्ध और वर्ष 1819 से 1826 के दौरान मणिपुर पर बर्मा के कर्जों के कठिन दौर का उल्लेख कर कहा कि राज्य की भूमि, पहचान और विरासत की रक्षा में सभी समुदायों ने योगदान दिया है। उन्होंने उम्मीद जाहिर की कि उत्सव से राज्य में शांति और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होगा।



गोवा में कन्नड़ बोलने से नहीं मिलेगा वोट, मुख्यमंत्री सावंत का कांग्रेस पर निशाना

पणजी , एजेंसी। गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने कांग्रेस पर निशाना साधकर कहा कि राज्य में कन्नड़ भाषा बोलने से वोट हासिल नहीं हो सकते, क्योंकि यहां के लोग कोंकणी भाषा अच्छी तरह समझते हैं। उनका यह बयान कर्नाटक के मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के गोवा में कन्नड़ भाषा में दिए गए भाषण को लेकर आया है। दोनों राज्यों में राजनीतिक बयानबाजी के बीच यह मुद्दा चर्चा में है। सीएम सावंत ने मुरगांव तालुका में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कोरटालिम विधानसभा क्षेत्र कार्यालय का उद्घाटन कर यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि गोवा की अपनी भाषाई और सांस्कृतिक पहचान है तथा यहां के मतदाताओं से संवाद करने के लिए लोकल भाषा और भावनाओं को समझना जरूरी है। दरअसल, कर्नाटक के मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने आठ अक्टूबर को कांग्रेस की 'गोय राखण यात्रा' के दौरान कोरटालिम में आयोजित जनसभा को कन्नड़ भाषा में संबोधित किया था।

चक्रवात का अलर्ट: ओडिशा के पांच जिलों में स्कूल-कॉलेज बंद, अधिकारियों की छुट्टियां रद्द

भुवनेश्वर, एजेंसी। ओडिशा में संभावित चक्रवाती तूफान के खतरे को देखकर राज्य सरकार ने तैयारियां तेज कर दी हैं। आंध्र प्रदेश के तट पर 28 अक्टूबर को भीषण चक्रवात के टकराने की आशंका के बीच ओडिशा के 5 जिलों में स्कूल, कॉलेज और आंगनवाड़ी केंद्र बंद रखने का आदेश दिया है। वहीं, सभी जिलाधिकारियों और महत्वपूर्ण विभागों में तैनात अधिकारियों की छुट्टियां रद्द कर उन्हें तत्काल मुख्यालय लौटने के निर्देश दिए हैं।

मुख्यमंत्री मांझी के अनुसार, गंजाम, गजपति, रायगढ़, कोरापुट और मलकानगिरि जिलों में 28 और 29 अक्टूबर को सभी शैक्षणिक संस्थान बंद रहने वाली हैं। अन्य जिलों में स्कूल-कॉलेज बंद करने का निर्णय संबंधित जिलाधिकारी स्थिति के आकलन के बाद लेने वाले हैं। मौसम विभाग ने 27 से 29 अक्टूबर तक ओडिशा में बहुत भारी बारिश की चेतावनी दी है। आंध्र प्रदेश में बापटला और विशाखापत्तनम के बीच 28 अक्टूबर को तट से टकराने की संभावना है। इस दौरान हवा की रफ्तार 115 से 125 किलोमीटर प्रति घंटे तक रह सकती है, जो बड़कर 140 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच सकती है।

ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी ने कहा कि भले ही चक्रवात के आंध्र प्रदेश के तट से

टकराने का अनुमान है, लेकिन ओडिशा सरकार किसी भी तरह का जोखिम नहीं लेना चाहती। उन्होंने अधिकारियों को लोगों की सुरक्षा, संवेदनशील क्षेत्रों से लोगों को निकालने और आपात स्थिति में तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री मांझी के अनुसार, गंजाम, गजपति, रायगढ़, कोरापुट और मलकानगिरि जिलों में 28 और 29 अक्टूबर को सभी शैक्षणिक संस्थान बंद रहने वाली हैं। अन्य जिलों में स्कूल-कॉलेज बंद करने का निर्णय संबंधित जिलाधिकारी स्थिति के आकलन के बाद लेने वाले हैं। मौसम विभाग ने 27 से 29 अक्टूबर तक ओडिशा में बहुत भारी बारिश की चेतावनी दी है। आंध्र प्रदेश में बापटला और विशाखापत्तनम के बीच 28 अक्टूबर को तट से टकराने की संभावना है। इस दौरान हवा की रफ्तार 115 से 125 किलोमीटर प्रति घंटे तक रह सकती है, जो बड़कर 140 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच सकती है। ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी ने कहा कि भले ही चक्रवात के आंध्र प्रदेश के तट से